ओ३म्

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

परोपकारिणी

वर्ष - ५६ अंक - ८ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र अप्रैल (द्वितीय) २०१४

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द के जीवन की झलकियाँ

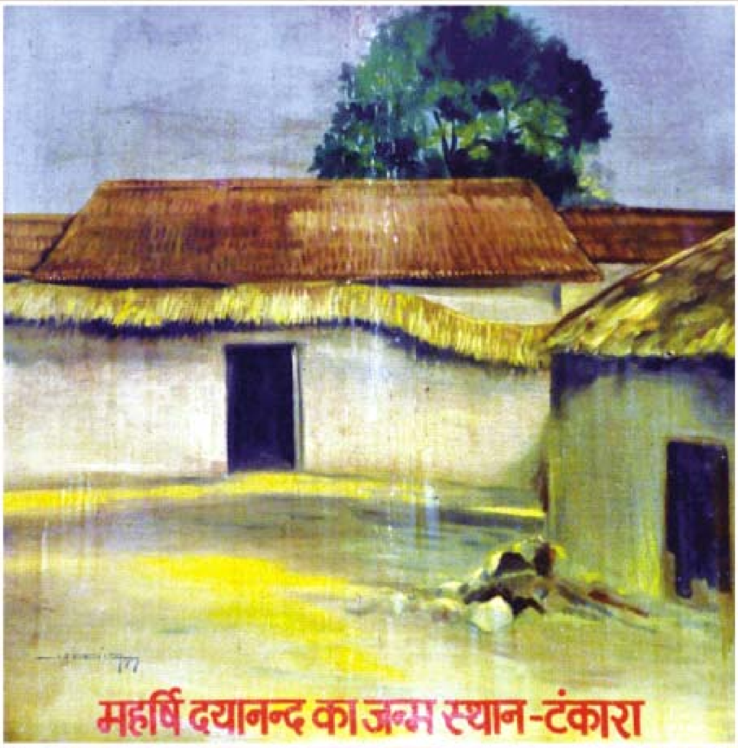

महर्षि दयानन्द का जन्म स्थान-टंकारा

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५६ **अंक :** ८
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: वैशाख कृष्ण, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-

भारत में

वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

अप्रैल द्वितीय २०१४

अनुक्रम

१. १९६२ के युद्ध का अपराधी कौन?	सम्पादकीय	०४
२. उत्कृष्ट मनुष्य - निकृष्ट मनुष्य	स्वामी विष्वङ्	०७
३. वैदिक यन्त्रालय का संक्षिप्त विवरण		११
४. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१३
५. कौन हैं हम भारतवासी?	ज्ञानेन्द्र मिश्र	२२
६. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२५
७. सरदार पटेल ने चीन को १८ वर्ष पूर्व पहचान लिया था		२९
८. जिज्ञासा समाधान-९१	आचार्य सोमदेव	३४
९. संस्था-समाचार		३८
१०. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

१९६२ के युद्ध का अपराधी कौन?

स्वतन्त्रता के बाद जो-जो पराजय के अवसर इस देश के इतिहास में आये, उनमें प्रथम कश्मीर का पूर्ण रूप से भारत में विलय न कर पाना तथा चीन के द्वारा भारत की ८० हजार वर्ग किलोमीटर भूमि पर अवैध अधिकार जमा लेना। इन दोनों के लिए हम पाकिस्तान और चीन को दोषी मानते हैं, परन्तु वास्तविक दोषी हम हैं, इस देश का शासन और उसके नेता प्रधानमन्त्री नेहरू स्वयं दोषी हैं। यह कितनी हास्यास्पद बात है कि १९६२ के चीन के युद्ध की पराजय के कारणों की जाँच करने वाली समिति ने इस परिणाम के लिए भारत सरकार को पूर्ण रूप से उत्तरदायी ठहराया है और सरकार के मुखिया होने के नाते इस सरकार के प्रधानमन्त्री के रूप में निश्चित रूप से पं. नेहरू उत्तरदायी हैं, परन्तु कांग्रेस का कहना है- क्योंकि इसमें पं. नेहरू का नाम से उल्लेख नहीं है, अत: पं. नेहरू को इस पराजय के लिए उत्तरदायी नहीं ठहराया जा सकता। यह है चोरी और सीनाजोरी। १९६२ के चीन के युद्ध की भूमिका तो बहुत पहले से बन रही थी। भारत सरकार को समय-समय पर इसकी सूचना दी गई थी। समाजवादी नेता राममनोहर लोहिया ने तिब्बत के विषय में चीन के विस्तारवादी नीति पर भारत सरकार को सचेत किया था। उन्होंने इस विषय पर समाचार पत्रों में लेख भी लिखे। पं. नेहरू को भारत के गृहमन्त्री सरदार पटेल ने भी सचेत किया था। परन्तु भारत सरकार के मुखिया पं. नेहरू तथा रक्षामन्त्री कृष्ण मेनन की बुद्धि पर पर्दा पड़ा हुआ था। इन दोनों ने सब कुछ जानते और देखते हुए भी इस परिस्थिति को रोकना तो दूर की बात, स्वीकार करने से भी इन्कार कर दिया था।

हमारी सरकार का दृष्टिकोण कितना अज्ञानता और देशभक्ति से दूर था, इसको उस समय में प्रधानमन्त्री और रक्षामन्त्री के विचारों से समझा जा सकता है। रक्षामन्त्री कृष्ण मेनन के द्वारा भारत के सैनिक उपकरण शस्त्रास्त्र बनाने वाले कारखानों में शस्त्रास्त्र बनाने के स्थान पर चाय और कॉफी बनाने की मशीने बनाई जा रहीं थीं। जब रक्षामन्त्री कृष्ण मेनन से कुछ पत्रकारों ने प्रश्न किया तो उन्होंने क्रोधित होकर कहा- ''हमें सैनिक तैयारियों की क्या आवश्यकता है? चीन तो हमारा गहरा दोस्त है।'' चीन ने भारतीय क्षेत्र में १९५७ से अतिक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया था। इस विषय में चीन सरकार को विरोध-पत्र लिखकर ही इतिश्री कर ली गई थी। १९६० में चीन ने लद्दाख के हाटस्प्रिंग क्षेत्र हमारे २९ सी.आर.पी. सैनिकों की हत्या कर दी, तब हमारी सरकार ने १९६१ में सीमावर्ती क्षेत्र में सैनिक चौकियाँ स्थापित करने का निश्चय किया। इससे चीन को तो सावधान कर दिया, परन्तु स्वयं युद्ध की कोई तैयारी नहीं की। रक्षामन्त्री कृष्ण मेनन ने पूरा बल इस बात पर लगाया कि भारत चीन के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं करेगा।

भारत के प्रधानमन्त्री का हाल इससे भी ऊँचा था, जब चीन तिब्बत पर अधिकार जमा रहा था और तिब्बत की सरकार भारत से सहयोग, सहायता माँग रही थी, उस समय भारत के उस महान कहे जाने वाले प्रधानमन्त्री ने तिब्बत की चीख को अनसुना कर चीन का साथ दिया। परिणामस्वरूप १९५० में चीन ने तिब्बत पर अधिकार कर लिया। उस समय पं. नेहरू ने चीन के इस कृत्य पर संसद में चर्चा कराने से भी इन्कार कर दिया और कहा यहाँ विषय अन्तर्राष्ट्रीय चर्चा का सामान्य विषय है। इसके विपरीत जिस देश से और जिस बात से भारत का दूर का भी सम्बन्ध नहीं था, उस कोरिया के संकट पर विचार करने के लिए पं. नेहरू ने संसद का विशेष सत्र बुलाया। यह विवेक था इस देश के महान प्रधानमन्त्री का? ठीक इसी समय पं. नेहरू ने 'तिब्बत में चीनी आक्रमण' संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक यह विचारणीय विषय न बने, इसके लिए प्रयास भी किया। इसके विपरीत चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता दिलाने के लिये पूरा जोर लगा दिया। इस तरह दूरी पर स्थित चीन को पं. नेहरू ने १९५२ में ही भारत के दरवाजे पर लाकर खड़ा कर दिया।

पं. नेहरू ने हिन्दी-चीनी भाई-भाई का नारा लगाकर २९ अप्रैल १९५४ को एक ऐतिहासिक सन्धि पर हस्ताक्षर किये। जिसको पञ्चशील नाम दिया गया। पं. नेहरू ने १८ मई १९५४ को इसके सम्बन्ध में संसद में घोषणा करते हुए कहा था कि स्वतन्त्रता के बाद आजतक इससे अच्छा कोई काम नहीं हुआ है। इस सन्धि के माध्यम से पिछले दशक में तिब्बत के लिये किया गया सारा का सारा अच्छा प्रयास व्यर्थ हो गया। इसके माध्यम से तिब्बत को चीनी क्षेत्र मान लिया और उसमें व्यापार करने की सन्धि की। जिस पञ्चशील को लेकर पं. नेहरू गर्व अनुभव कर रहे थे, उसके विषय में समाचार पत्रों में छपे चीनी प्रधानमन्त्री

चाऊ एन लाई के विचार जो उन्होंने १९७३ में अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन के सामने व्यक्त किये थे, ध्यान देने योग्य हैं– ''वास्तव में पञ्चशील का विचार हमारा था, पं. नेहरू की उस पर केवल सहमति थी और नेहरू ने ही उसे कार्यान्वित नहीं किया।'' आश्चर्य की बात है १९५२ में पं. नेहरू के ध्यान में यह बात लाई गई थी कि चीन भारत के अक्साईचिन क्षेत्र में घुसपैठ कर रहा है। पं. नेहरू के गुप्तचर विभाग के मुख्य अधिकारी बी.एन. मलिक ने प्रधानमन्त्री को अवगत करा दिया था कि अक्साईचिन में चीन खच्चरों के रास्तों को जीप गाड़ी के रास्तों में बदल रहा है और यह भी पं. नेहरू की जानकारी में था कि चीन ने १९५३ में इस खच्चर मार्ग को एक हाइवे–राजमार्ग में परिवर्तित कर दिया है। १९५५ में चीन और भारत की सेनाओं में सीमा पर मुठभेड़ प्रारम्भ हो गई थी। १९५७ में चीन ने अधिकारिक रूप से घोषणा की थी कि वह अक्साईचिन के माध्यम से एक्सिनजीयांग को तिब्बत से जोड़ रहा है। लेकिन भारत के प्रधानमन्त्री नेहरू और रक्षामन्त्री कृष्ण मेनन की बुद्धि में फिर भी चीन से युद्ध नहीं करने का विचार ही घर किये था। रक्षा सम्बन्धी चर्चा पर कृष्ण मेनन का विचार था कि हमें किससे रक्षा करनी है, कोई भी हमारे विरुद्ध नहीं है। परिणामस्वरूप जिस समय चीन ने भारत पर आक्रमण किया, उस समय कृष्ण मेनन स्वयं न्यूयार्क में थे। भारत के प्रधानमन्त्री पं. नेहरू इंग्लैण्ड, अफ्रिका और श्रीलंका के दौरे पर थे। किसी भी समझदार आदमी को इस परिस्थिति को समझने में कठिनाई नहीं होगी, परन्तु पं. नेहरू इस परिस्थिति को समझने में असमर्थ रहे। चीन की भावनाओं को समझते हुए पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल अयूब भारत के साथ रक्षा समझौता करना चाहते थे, परन्तु कृष्ण मेनन इस समझौते के विरोध में थे क्योंकि वे चीन को भारत का मित्र और पाकिस्तान को भारत का शत्रु समझते थे। इस वार्ता की विफलता पर पत्रकारों से बात करते हुए जनरल अयूब ने कहा था न जाने आपके प्रधानमन्त्री किस स्वप्नलोक में विचरण कर रहे हैं। उन्हें चीन के इरादों का कोई आभास नहीं है। चीन निश्चित रूप से भारत पर आक्रमण करेगा। एक साक्षात्कार में मेक्सवेल ने पं. नेहरू को इन हरकतों के लिए मूर्ख तक कहा था। पं. नेहरू और कृष्ण मेनन जैसे अदूरदर्शी नेताओं के कारण भारत की भूमि चीन ने हड़प ली तथा हजारों सैनिकों का बलिदान व्यर्थ गया तथा देश को पराजय का कलंक देखना पड़ा।

उस समय देश की परिस्थिति समिति के प्रतिवेदन में जो पराजय के कारणों का विश्लेषण किया है वह बहुत ही चौंकाने वाला है। सीमा पर पहले तो हमारी सुरक्षा चौकियाँ ही नहीं थी। १९६१ में तो सीमा पर चौकियाँ स्थापित करने का निर्णय लिया गया। दो हजार किलोमीटर लम्बी सीमा पर श्रीनगर से लेह के बीच १९६१ तक सड़क ही नही बनी थी, केवल चार हवाई पट्टियाँ थीं। सेना ने चौकियों पर एक ब्रिगेड सेना की माँग की थी, उन्हें दी गई एक बटालियन। इस तरह अग्रिम चौकियों की अपने केन्द्र से किसी प्रकार के सम्पर्क की व्यवस्था भी नहीं थी। इस लिये जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया तो युद्ध करने की जिम्मेदारी अग्रिम चौकियों पर डाल दी गई। वहाँ सैनिकों के पास लड़ने के लिये हथियार और गोला–बारूद ही नहीं था। शस्त्रास्त्र तो दूर की बात है, जहाँ का तापमान शून्य से चालीस डिग्री कम था, वहाँ सैनिकों के पास पहनने के लिए गर्म कपड़े ही नहीं थे। ऐसी परिस्थिति में बहुत सारे सैनिकों की मृत्यु बिना लड़े सर्दी के कारण ही हो गई। इस युद्ध में सिख लाइट इनफैन्ट्री के जवानों को अम्बाला छावनी से हवाई जहाज में भरकर बोसडीला के रणक्षेत्र में फेंक दिया गया और इन सैनिकों को इतनी भी सुविधा नहीं दी कि वे अपने लिए यहाँ से गर्म कपड़े ले जा सकते। ये सैनिक जब रणक्षेत्र में उतारे गये तो वे सूती कपड़े पहने हुए थे। बोसडीला का तापमान उस समय शून्य से ४२ डिग्री नीचे था। इस भयंकर सर्दी में हमारी सेना के जवान बिना लड़े सर्दी से ही मर गये। इसी प्रकार रेवाड़ी क्षेत्र के १३० सैनिक बर्फ के अन्दर सर्दी से जम गये, उनके हाथों की बन्दुक उनके हाथ में ही रह गयी, वे वैसे ही मर गये। जब शव मिले तो उनके हाथ में बंदूकें थी।

इस लड़ाई के सेनापति थे कोर कमाण्डर ले. जनरल बी.के. कौल, जो युद्धभूमि से भागकर सैनिकों की जान की कीमत पर अपनी जान बचाने के लिए दिल्ली आये और बीमार होने का बहाना बना लिया। ये सज्जन नेहरू के निकट सम्बन्धी थे, अत: इन पर किसी तरह की कार्यवाही नहीं की गई, जबकि यह एक देशद्रोह का अपराध था।

आज चीन नेपाल में घुसपैठ बढ़ाकर भारत विरोधी कार्यवाही को बढ़ावा दे रहा है। पाकिस्तान से समझौता कर भारतीय क्षेत्र में अपनी सड़के बिछा दी हैं। म्यामार के माध्यम से भारत को घेरने के प्रयास कर रहा है। भारत में नक्सलवादियों की सहायता करके प्रशासन को अस्थिर

करने में लगा हुआ है। भारत की समुद्री सीमाओं के माध्यम से चारों ओर जाल फैला रहा है। रक्षामन्त्री फर्नाण्डीज ने संसद में कहा था, आज चीन हमारा सबसे बड़ा शत्रु है। आज भी वह धीरे-धीरे भारतीय सीमा में घुसकर अपनी चौकियाँ बनाने में लगा हुआ है। अरुणाचल की एक लाख वर्ग किलोमीटर भूमि पर आज भी दावा कर रहा है। विरोध करने पर अपनी शर्तों पर समझौता करता है। भारत सरकार उसके सामने अपने को विवश और असहाय पाती है, क्योंकि आज भी भारत की सरकार पं. नेहरू की मानसिकता में जी रही है।

आज यह विषय चर्चा में इस कारण आया है, क्योंकि एक विदेशी पत्रकार नैवल मेक्सवेल ने भारत सरकार द्वारा तैयार कराई गई हैण्डरसन ब्रुक्स की गोपनीय रिपोर्ट को अपने ब्लॉग पर डाल दिया है, जो रिपोर्ट सरकार ने आज तक गोपनीय कहकर दबाये रखी। यह समिति युद्ध के चार मास बाद मार्च १९६३ में हेन्डरसन ब्रुक्स तथा पी.ए. भगत की सदस्यता में गठित की गई थी तथा इस समिति ने अपनी जाँच रिपोर्ट मई १९६३ को सरकार को सौंप दी थी। तब से आज तक यह रिपोर्ट गोपनीय ही चली आ रही है। उस समय के रक्षामन्त्री यशवन्तराव चव्हाण से लेकर आज के रक्षामन्त्री ए.के. एण्टोनी तक सभी इसे अतिगोपनीय ही मानते रहे। क्योंकि इस रिपोर्ट को देखने से स्पष्ट हो जाता है कि चीन का युद्ध सेना की असफलता नहीं थी, वह राजनीतिक नेताओं की और सरकार की असफलता थी, इसीलिए सरकार उसे सार्वजनिक करने से डरती है।

आज जब रिपोर्ट सुलभ हो गई है तो देश के हित चिन्तकों को उस पर चिन्तन करने की आवश्यकता है क्योंकि परिस्थिति आज भी बदली नहीं हैं। राजनीतिक दुर्बलता, निर्णय की अक्षमता, आत्मविश्वास की कमी, देशभक्ति का अभाव ही ऐसी परिस्थितियों के लिए उत्तरदायी है, जिसे देश की मानसिकता से दूर करने की आवश्यकता है, आज कृष्ण की तरह देश को सम्बोधित कर सके-

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशोलभस्व,
जित्वा शत्रून्मुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।

शत्रू को जीतो, यश प्राप्त करके समृद्ध राज्य के अधिष्ठाता बनो, ऐश्वर्य का उपभोग करो।

-धर्मवीर

आवासिकं संस्कृत-भाषा-शिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम्

लोक-भाषा-प्रचार-समिति-राजस्थानशाखाया: परोपकारिणीसभायाश्च मिलितोद्यमेन अजमेरनगरे आवासिकं संस्कृतभाषाशिक्षण-प्रशिक्षण-शिविरम् आयोज्यते।

अवधि: - २४-०५-२०१४ त: ३१-०५-२०१४ (अष्ट दिनात्मकम्)
(२३-०५-२०१४ दिनांकस्य सायंकालपर्यन्तं शिविरस्थलम् ऋषि-उद्यानं प्राप्तव्यमेव भविष्यति।)

स्थानम् - ऋषि-उद्यानम्, पुष्करमार्ग:, अजमेर-३०५००१, दूरभाष:- ०१४५-२६२१२७०

योग्यता - संस्कृते रुचिमन्त: संस्कृत-आचार्या:, अध्यापका:, संस्कृतछात्रा:, उच्च माध्यमिक-वरिष्ठोपाध्याय-बी.ए./एम.ए./शास्त्रिकक्षा/आचार्यकक्षाछात्राश्च।

शुल्कम् - ३०० रुप्यकाणि।

व्यवस्था - एतद् शिविरम् आवासिकमस्ति, प्रशिक्षणार्थिनां भोजनावास व्यवस्था शिविरस्थाने भविष्यति
- बालिकानां, नारीणां कृते च पृथक् निवास व्यवस्था वर्त्तते, शिविरार्थिन: नित्योपयोगिनि वस्तूनि, शय्यावस्त्राणि लेखनसामग्री: च आनयेयु:।

स्वरूपम्- शिविरे अहोरात्रम् अखण्डं संस्कृतमयवातावरणम्,
- संस्कृतेन धाराप्रवाहं सम्भाषणस्य अभ्यास:,

विशेष - **संस्कृत-सम्भाषण सीखने का इच्छुक कोई भी व्यक्ति या विद्यार्थी सुबह ९ से ११ बजे तक शिविर में भाग ले सकता है।**

डॉ. धर्मवीर:
अध्यक्ष:

डॉ. निरञ्जन साहु:
सचिव:
०९४१४७०९४९४, ९८२९१७६४६०

आध्यात्मिक चिन्तन के क्षण..........

उत्कृष्ट मनुष्य - निकृष्ट मनुष्य

- स्वामी विष्वङ्

ब्रह्माण्ड की संरचना को देखने से प्रत्येक बुद्धिमान् को यह जानकारी होती है कि ब्रह्माण्ड बुद्धिपूर्वक बना हुआ है। संसार का यह सार्वभौम सिद्धान्त (नियम) है कि जो-जो वस्तु बुद्धिपूर्वक बनती है, उस-उस को बनाने वाला बुद्धिमान् ही होता है। इस सार्वभौम सिद्धान्त के अनुसार इस विशाल ब्रह्माण्ड को भी किसी न किसी बुद्धिमान् ने अवश्य बनाया होगा। यह अलग बात है कि वह कौन है? परन्तु किसी ने बनाया अवश्य है। क्योंकि बिना बनाये सबसे उत्कृष्ट ब्रह्माण्ड अपने आप (बिना कर्ता के) नहीं बन सकता। इस विशाल ब्रह्माण्ड में दो प्रकार की कृतियाँ (बने हुए पदार्थ) विद्यमान हैं। एक प्रकार की कृति जड़ के रूप में है, दूसरी प्रकार की कृति चेतन (प्राणी के शरीर) के रूप में विद्यमान है। जड़ कृतियों में एक से बढकर एक कृति दृष्टिगोचर होती है, जो वर्णनानीत होती है और चेतन कृतियों में भी एक से बढ़ कर एक कृति दृष्टिगोचर होती है। इन दोनों प्रकार की कृतियों में चेतन की कृतियाँ विलक्षण हैं, सूक्ष्म से सूक्ष्म और स्थूल से स्थूल कृतियाँ हैं। मनुष्य की आँखों से न दिखने (दूरबिन आदि से दिखने) वाली आकृतियों से लेकर बड़े-बड़े व्हेल मछलियों तक विभिन्न प्रकार के प्राणी हैं। प्राणियों में मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जो सर्वाधिक बुद्धि का प्रयोग करके सब प्राणियों से अधिक सुख का भोग कर सकता है, कर रहा है। मनुष्य कि बुद्धि के कारण ही मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहा जाता है। मनुष्य को मनुष्य ही सर्वश्रेष्ठ प्राणी कहता है, क्योंकि मनुष्य के पास अन्य प्राणियों से अधिक बुद्धि-ज्ञान है। जिस प्रकार मनुष्य ने मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ माना है, उसी प्रकार मनुष्य ने मनुष्य को सबसे निकृष्ट प्राणी भी माना है। जब मनुष्य अपनी उत्कृष्ट बुद्धि का प्रयोग करता है, तब उसे सर्वश्रेष्ठ कहा जाता है। यदि मनुष्य अपनी उत्कृष्ट बुद्धि का प्रयोग नहीं करता है, तब उसी मनुष्य को सबसे निकृष्ट प्राणी भी कहा जाता है। इसका अभिप्राय यह है कि मनुष्य के पास बुद्धि के होने मात्र से उसे उत्कृष्ट नहीं कहा जाता और बुद्धि न होने मात्र से उसे निकृष्ट नहीं कहा जाता, बल्कि बुद्धि के प्रयोग करने और न करने से उत्कृष्ट और निकृष्ट कहा जाता है।

प्रत्येक मनुष्य अपने आप को उत्कृष्ट कहलवाना चाहता है, परन्तु केवल चाह रखने मात्र से कोई मनुष्य उत्कृष्ट नहीं बनता है। उत्कृष्ट बनने के लिए मनुष्य को बुद्धि का प्रयोग करना पड़ता है। बुद्धि सार्थक तभी बन पाती है, जब उसे प्रयोग में लाया जाता है। यदि बुद्धि के होते हुए भी उसे प्रयोग में नहीं लाया जाता है, तो बुद्धि के होने और न होने में विशेष अन्तर नहीं रह जाता है, अर्थात् ऐसे व्यक्ति को बुद्धि रहित ही कहा जाना चाहिए। इसलिए मनुष्य बुद्धि का प्रयोग करके सर्वोत्कृष्ट बन जाता है और बुद्धि का प्रयोग न करके सर्वनिकृष्ट भी बन जाता है। इसलिए सार्वभौम सिद्धान्त है कि बुद्धि को प्राप्त इसलिए किया जाता है, जिससे उसका प्रयोग किया जा सके। अब प्रश्न उपस्थित होता है कि बुद्धि का प्रयोग कैसे किया जाता है? जिससे बुद्धि को सार्थक बनाया जा सके और मनुष्य को उत्कृष्ट बना सके। इसका समाधान है कि 'कर्म' के माध्यम से बुद्धि का प्रयोग होता है। कर्म ही बुद्धि को सार्थक बना देता है, क्योंकि जानकारी (बुद्धि) ही मनुष्य को कर्मों में प्रवृत्त करती है। मनुष्य के पास जितनी बुद्धि होगी, जैसी बुद्धि होगी, जिस स्तर की बुद्धि होगी, उतने कर्म, वैसे कर्म, उतने स्तर के कर्म ही कर पायेगा। यद्यपि मनुष्य बिना जानकारी के और बिना कर्म के जीवित नहीं रह सकता अर्थात् मनष्य को कहने की आवश्यकता नहीं पड़ती है कि तुझे जानकारी प्राप्त करनी चाहिए, तुझे कर्म करने चाहिए। बिना कहे मनुष्य जानकारी प्राप्त करता है और बिना कहे कर्म भी करता है, परन्तु इतने मात्र से कोई मनुष्य उत्कृष्ट नहीं बनता। उत्कृष्ट बनने के लिए मनुष्य को यह कहना ही पड़ता है कि जानकारी प्राप्त करो, कर्म करो और यह कहना जीवन पर्यनत करना पड़ता है। स्वत: जानकारी प्राप्त करने वाले को और स्वत: कर्म करने वाले को यह कहना कि तुम जानकारी प्राप्त करो, तुम कर्म करो ऐसा कहना क्या उचित है? हाँ उचित है, क्योंकि मनुष्य को उचित-सत्य, न्याययुक्त, प्रमाण युक्त जानकारी प्राप्त करने के साथ-साथ उत्कृष्ट जानकारी को प्राप्त करना अति आवश्यक है। इसी प्रकार उचित-सत्य, न्याययुक्त, प्रमाण युक्त कर्म करने के साथ-साथ उत्कृष्ट कर्म भी करने चाहिए।

यदि मनुष्य को जानकारी पाने व कर्म करने के लिए न कहा जाये, प्रेरणा न दी जाये, स्मरण न दिलाया जाये, तो मनुष्य उत्कृष्ट जानकारी प्राप्त करना एवं उत्कृष्ट कर्म करना प्राय: नहीं कर पाता है। इसलिए मनुष्य को जीवन पर्यन्त कहना पड़ता है और ऐसा कहना ही उचित है। इस विशाल ब्रह्माण्ड में अरबों की संख्या में मनुष्य हैं, परन्तु सभी मनुष्य उत्कृष्ट नहीं बनते हैं। वे ही मनुष्य बन पाते हैं, जो उत्कृष्ट जानकारी को पा कर उत्कृष्ट कर्म करते हैं। अब तक वे ही मनुष्य उत्कृष्ट बने हैं, बन रहे हैं और बनेंगे, जिन्होंने उत्कृष्ट जानकारी व उत्कृष्ट कर्म किये हैं, कर रहे हैं और करेंगे। यह सार्वभौम सिद्धान्त है कि प्रत्येक मनुष्य उत्कृष्ट बन सकता है। कोई भी मनुष्य उत्कृष्ट बनने की चाह को मिटा नहीं सकता अर्थात् प्रत्येक मनुष्य उत्कृष्ट बनना चाहता है। अपनी चाह को साकार करने के लिए उत्कृष्ट कर्म करता जाये, तो मनुष्य अपने आप उत्कृष्ट बन जाता है। इस संसार में मनुष्य दो प्रकार के कर्म करता है। एक प्रकार के कर्मों को पाप कहा जाता है और दूसरे प्रकार के कर्मों को पुण्य कहा जाता है। मनुष्य समुदाय इस बात को अच्छी प्रकार जानता है कि पाप किसे कहते हैं और पुण्य किसे कहते हैं। परन्तु पुण्य को जानता हुआ भी मनुष्य उतना पुण्य नहीं कर पाता है, जितना करने से मनुष्य उत्कृष्ट बन जाता है। इसी प्रकार मनुष्य पाप को जानता हुआ भी उसे छोड़ नहीं पाता है। इस कारण मनुष्य एक प्रकार से बीच में लटका हुआ जैसा रहता है। ऐसा मध्यस्थ व्यक्ति अधिक दु:ख पाता है। दु:ख भोगता हुआ व्यक्ति दु:खों से सर्वथा दूर होना चाहता है। उत्कृष्ट मनुष्य ही दु:खों से सर्वथा दूर हो पाता है। मनुष्य मन, वाणी और शरीर से कर्म करता है। शारीरिक क्षमता की अपेक्षा और वाचनिक क्षमता की अपेक्षा मानसिक क्षमता अधिक होती है, इसलिए मनुष्य मन से सर्वाधिक कर्म कर सकता है। यदि मनुष्य मानसिक पुण्य कर्म करना प्रारम्भ कर दे, तो मनुष्य स्वयं न गिनने योग्य अनगिनत पुण्य कर्म कर सकता है।

मनुष्य मन से अधिक से अधिक पुण्य कर्म करता जाये, तो परिणाम यह निकल कर आयेगा कि वह वाणी से और शरीर से पाप कर्म करना सर्वथा बन्द कर सकता है, कर देता है। जिससे प्राणी मात्र को दु:ख देना बन्द हो जायेगा, क्योंकि मनुष्य मन से पाप कर करके ही वाणी से और शरीर से पाप करने लगता है। जब मन से पाप ही नहीं होंगे तब वाणी व शरीर से पाप करने का प्रश्न ही नहीं उठेगा, इसलिए मन से अधिक से अधिक पुण्य कर्म करके एक स्थिति में जा कर मनुष्य फिर कभी मन से पाप ही नहीं करेगा। ऐसी स्थिति में मनुष्य पाप रहित होकर केवल पुण्य करता हुआ उत्कृष्ट मनुष्य बन जायेगा। पुण्य कर्म दो क्षेत्रों में रहकर कर सकते हैं अर्थात् लौकिक क्षेत्र में रह कर लौकिक व्यक्ति लोक का उपकार कर सकता है और आध्यात्मिक क्षेत्र में रह कर आध्यात्मिक व्यक्ति आध्यात्मिक लोक और भौतिक लोक का उपकार कर सकता है। उपकार तो दोनों क्षेत्रों में रहने वाले कर रहे हैं, परन्तु लौकिक व्यक्ति के उपकार अलग प्रकार के होंगे और आध्यात्मिक व्यक्ति के उपकार अलग प्रकार के होंगे। उदाहरण के लिए लौकिक व्यक्ति जो उपकार करता है, वह इस प्रकार का होता है कि पानी पिलाना, भोजन खिलाना, वस्त्र देना इत्यादि का अथवा भौतिक अलग-अलग साधन चाहे आने-जाने के साधन या घर में प्रयोग में आने वाले साधन या भौतिक विद्या को प्राप्त करने के साधन इत्यादि। लौकिक व्यक्ति लौकिक साधनों की ही आपूर्ति कर सकता है और ऐसा करके लौकिक उपकार का पुण्य कमा लेता है। लौकिक व्यक्तियों में भी अलग-अलग स्तर वाले होने के कारण अलग-अलग स्तर के लौकिक पुण्य कमा लेते हैं। अति सामान्य लौकिक पुण्य से लेकर विशिष्ट लौकिक पुण्य तक पुण्य प्राप्त किया जा सकता है या किया जाता है। उच्च स्तर के लौकिक (वैज्ञानिक) व्यक्ति उच्च स्तर के लौकिक उपकार करते हैं। लौकिक उपकरण बनाकर सैंकड़ों, हजारों, लाखों, करोड़ों और अरबों लोगों का उपकार करते हैं। यद्यपि इन उपकारों के बदले में लौकिक प्रतिलाभ उपकार करने वालों को मिलता भी है, परन्तु प्रतिलाभ की अपेक्षा उपकार का लाभ अधिक होने से उनको लौकिक पुण्य अधिक ही मिलता है। लौकिक उपकरणों का प्रयोग आध्यात्मिक व्यक्ति भी करते हैं। इस पक्ष में लौकिक व्यक्ति आध्यात्मिक क्षेत्र के लोगों का भी उपकार करते हैं, परन्तु सभी आध्यात्मिक व्यक्ति सभी प्रकार के लौकिक उपकरणों का प्रयोग नहीं कर पाते हैं या नहीं करते हैं। क्योंकि लौकिक व्यक्तियों का उपकार बाह्य साधनों (वाणी व शरीर) से होता है। यहाँ इतना अवश्य समझना चाहिए कि लौकिक उपकरणों से जो भी उपकार किया जाता है, उस उपकार के पीछे लौकिक प्रतिलाभ जुड़ा रहता है। इसमें बिना लौकिक प्रतिलाभ के उपकार नहीं किया जाता है।

आध्यात्मिक व्यक्ति जो उपकार करते हैं, उनका

उपकार सभी आध्यात्मिक और सभी लौकिक व्यक्तियों को प्राप्त होता है, क्योंकि उनका उपकार बाह्य साधनों की अपेक्षा आन्तरिक (मानसिक) अधिक होता है। मन से जो उपकार करते हैं, वह उपकार प्राणी मात्र के लिए करते हैं। इस उपकार के पीछे प्राणी मात्र का कल्याण जुड़ा रहता है। यद्यपि मन से जो उपकार किया जाता है, वह उपकार स्वयं के लिए, परिजनों के लिए, सम्बन्धियों के लिए, अपने समाज के लिए और अपने राष्ट्र के लिए भी किया जाता है। परन्तु ऐसा मानसिक उपकार लौकिक व्यक्ति कर सकते हैं, लेकिन जिनको आध्यात्मिक कहा जाता है। वे आध्यात्मिक व्यक्ति किसी परिधि (सीमा) में रह कर उपकार नहीं कर सकते, उन्हें **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** के अनुसार समस्त प्राणी मात्र के लिए उपकार करना पड़ता है। ऐसा करने पर ही उनको आध्यात्मिक कहा जाता है अन्यथा वे भी लौकिक माने जायेंगे। इसलिए आध्यात्मिक व्यक्ति का दायित्व लौकिक व्यक्तियों से अधिक होता है। यदि यहाँ कोई कहे कि क्या लौकिक व्यक्ति प्राणी मात्र के कल्याण के लिए उपकार नहीं कर सकता? हाँ, कर सकता है, परन्तु वह आध्यात्मिक उपकार ही माना जायेगा, लौकिक उपकार नहीं और ऐसा करता हुआ लौकिकता को छोड़कर आध्यात्मिक बन जायेगा। क्योंकि लौकिक व्यक्ति माता, पिता आदि लौकिक सम्बन्धियों को छोड़ नहीं पाता है अर्थात् माता, पिता, पति, पत्नी आदि में राग, द्वेष और मोह रखता है। इन राग, द्वेष और मोह को हटाये बिना प्राणी मात्र के कल्याण के लिए उपकार करना सम्भव नहीं है। क्या लौकिक व्यक्ति लौकिक रहते हुए आध्यात्मिक पुण्यकर्म नहीं कर सकता है? हाँ, आंशिक कर सकता है। जब कभी सात्विक स्थिति में आता है, तो उस स्थिति में कुछ काल के लिए आध्यात्मिक मानसिक कर्म अवश्य कर लेता है। परन्तु ऐसी स्थिति बहुत कम मात्रा में आती है। इतने मात्र से उस व्यक्ति का पूर्ण कल्याण नहीं होता। हाँ, पूर्ण कल्याण के लिए पूर्ण आध्यात्मिक बनना होगा। राग, द्वेष और मोह से ऊपर उठे हुए व्यक्ति को ही आध्यात्मिक कहा जाता है। इसलिए आध्यात्मिक व्यक्ति मन से अनगिनत मानसिक उपकार कर करके अनगिनत पुण्य कमा लेता है। यद्यपि आध्यात्मिक व्यक्ति मानसिक पुण्य अधिक करते हैं, केवल मानसिक पुण्य ही करते हों ऐसा भी नहीं है। हाँ, मानसिक पुण्य के साथ-साथ समय, अनुकूलता, सामर्थ्य आदि के अनुसार बाह्य साधनों से भी उपकार करते हैं। जिस प्रकार से लौकिक व्यक्ति बाह्य साधनों से उपकार करते हुए प्रतिलाभ की अपेक्षा रखते हैं व लेते हैं। उसी प्रकार से आध्यात्मिक व्यक्ति प्रतिलाभ नहीं ले सकते, नहीं लेते हैं। यदि प्रतिलाभ लेने लगे तो आध्यात्मिकता छूट जायेगी और लैकिकता आयेगी। इसलिए बाह्य साधनों से उपकार करते हुए प्रतिलाभ नहीं लेते हैं, इस कारण उनका उपकार शत प्रतिशत् केवल उपकार माना जाता है। यह ही लौकिक और आध्यात्मिक व्यक्तियों में विशेष अन्तर है और यह अन्तर आध्यात्मिक व्यक्ति को विशेष बनाता है। इस विशेषता के कारण लौकिक उत्कृष्ट कर्म की अपेक्षा आध्यात्मिक उत्कृष्ट कर्म महान बन जाता है।

लौकिक व्यक्ति राग, द्वेष और मोह से ऊपर उठ नहीं पाता है, इसलिए वह केवल लौकिक उपकार (जो लौकिक प्रति लाभ से जुड़ा हुआ) ही कर पाता है, आध्यात्मिक उपकार नहीं कर पाता है। परन्तु आध्यात्मिक व्यक्ति आध्यात्मिक उपकार के साथ-साथ लौकिक उपकार भी करता हुआ लौकिक प्रतिलाभ से दूर रहता है। इसलिए दोनों के उपकार उत्कृष्ट होते हुए भी आध्यात्मिक व्यक्ति के उपकार को सर्वोत्कृष्ट उपकार कहा जाता है। इस प्रकार मनुष्य सर्वोत्कृष्ट उपकार करके सर्वोत्कृष्ट मनुष्य बन सकता है और लौकिक उपकार न करके लोगों का अपकार कर-करके मनुष्य सर्व निकृष्ट भी बन जाता है। कोई भी मनुष्य निकृष्ट नहीं बनना चाहता है, परन्तु अपकार कर-करके निकृष्ट बन जाता है। यदि निकृष्टता से ऊपर उठना चाहता है, तो उसे अपकार करना बन्द करना पड़ेगा और उत्कृष्ट कोई भी बनना चाहता है, परन्तु उत्कृष्ट बनने के लिए उत्कृष्ट कर्म नहीं कर पाता। इसलिए कोई भी उत्कृष्ट नहीं बनता, यदि उत्कृष्ट बनना है, तो उत्कृष्ट कर्म करता जाये। उत्कृष्ट कर्म कर-करके मनुष्य सर्वोत्कृष्ट बनना चाहता है। ऐसी स्थिति में मनुष्य आध्यात्मिकता में प्रवेश करता है। बिना अपकार को छोड़े उपकार नहीं कर सकता। उपकार के बिना उत्कृष्टता नहीं, उत्कृष्टता को कर-करके सर्वोत्कृष्टता में प्रवेश करके सर्वोत्कृष्ट बन जाता है। यदि कोई मनुष्य यह कहे कि अपकार को छोड़ना कोई सरल नहीं है, ऐसे कठिन कार्य को करते हुए व्यक्ति उत्कृष्ट बन जाये, इसी में सार्थकता है फिर सर्वोत्कृष्ट बनने की क्या आवश्यकता है? हाँ आवश्यकता है, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य पूर्ण सुख-आनन्द चाहता है। इसलिए पूर्ण सुख-आनन्द के लिए सर्वोत्कृष्ट बनना ही होगा। कोई कहे कि हमें सर्वोत्कृष्ट बनने की इच्छा नहीं है, तो यहाँ सर्वोत्कृष्ट

का अभिप्राय है कि पूर्ण आनन्द को पाना, जो भी पूर्ण आनन्द को पाते हैं वे सभी सर्वोत्कृष्ट कहलायेंगे। यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक मनुष्य सर्वोत्कृष्ट बनने की चाह रखता हो? हाँ, चाह तो प्रत्येक मनुष्य रखता है, यह अलग बात है कि समय, परिस्थिति, अनुकूलता आदि के न होने पर मनुष्य न चाहे, परन्तु सर्वोत्कृष्ट बनने की चाह स्वभाव के रूप में अवश्य रहेगी। हाँ, जब कभी अनुकूल परिस्थिति उपस्थित हो जाये, तो मनुष्य अवश्य चाहेगा। इसलिए मनुष्य आज नहीं तो कल या इस जन्म में नहीं तो किसी और जन्म में कभी न कभी अवश्य सर्वोत्कृष्ट बनने की चेष्टा करेगा। इस सार्वभौम सिद्धान्त को नकार नहीं सकते।

महर्षि पतञ्जलि और महर्षि वेदव्यास ने योगदर्शन में वाचनिक और शारीरिक कर्मों की अपेक्षा मानसिक कर्मों को अधिक बलवान माना है। इसलिए मानसिक कर्म अधिक महत्त्व रखते हैं। यद्यपि मानसिक कर्म पाप और पुण्य के रूप में दोनों प्रकार से कर सकते हैं, परन्तु पाप कर्म नहीं करना है। यदि पाप करने लगते हैं, तो मनुष्य निकृष्ट बन जायेगा। इसलिए उत्कृष्ट बनने के लिए पुण्य कर्म ही करने होंगे और पुण्य कर्म भी आध्यात्मिकता से जुड़े हुए हों। ऐसी स्थिति में मनुष्य उत्कृष्ट बन जाता है। मानसिक पुण्य कर्म करने की क्या प्रक्रिया होती है? इसका ज्ञान प्रत्येक आध्यात्मिक मनुष्य को कर लेना चाहिए, क्योंकि आध्यात्मिक व्यक्ति आध्यात्मिक तब तक ही रह सकता है, जब तक आध्यात्मिक मानसिक पुण्य कर्म करता रहता है। यदि आध्यात्मिक पुण्य कर्म करना छोड़ दिया जाये, तो आध्यात्मिक संज्ञा (नाम) मात्र रह जायेगा और व्यक्ति लौकिक बना हुआ होगा। इसलिए आध्यात्मिक होने की पहचान/चिह्न आध्यात्मिक पुण्य कर्म हैं, इन्हीं पुण्य कर्मों से आध्यात्मिक व्यक्ति सर्वोत्कृष्ट मनुष्य बन जाता है।

यह स्पष्ट किया गया था कि ज्ञान के अनुसार कर्म होते हैं। यदि ज्ञान उत्कृष्ट होगा तो कर्म उत्कृष्ट होंगे। उत्कृष्ट ज्ञान भी दो प्रकार का होता है- एक शुद्ध-सत्य ज्ञान दूसरा अशुद्ध-असत्य ज्ञान। यदि अशुद्ध ज्ञान से युक्त होकर कर्म प्ररम्भ करे तो मन से ही प्रारम्भ होगा और शुद्ध ज्ञान से युक्त होकर प्रारम्भ करे तो भी मन से प्रारम्भ होगा। इसलिए मन में जितने पुण्य कर्म करेंगे, उसी के अनुरूप, वाणी और शरीर से पुण्य कर्म कर पायेंगे। इस कारण मन में केवल पुण्य ही करना प्रारम्भ कर दिया जाये पाप बिल्कुल न किया जाये, ऐसी स्थिति में वाणी व शरीर से पाप होंगे ही नहीं। इसके लिए शुद्ध ज्ञान दो प्रकार का हो- एक भौतिक (जड़ सम्बन्धी) दूसरा आध्यात्मिक (चेतन सम्बन्धी) इन दो प्रकार के शुद्ध ज्ञान को रखने वाले आध्यात्मिक व्यक्ति सात्विक मन से, एकाग्रता से मानसिक कर्म कर सकते हैं। महर्षि पतञ्जलि एवं महर्षि वेदव्यास के अनुसार मानसिक पुण्य कर्म करने वाले वे होते हैं, जो विशेष मानसिक तपस्या करते हैं, विशेष मानसिक स्वाध्याय करते हैं और सात्विक मन से एकाग्रता से युक्त होकर ध्यान करने वाले होते हैं। वे बाह्य साधनों (वाणी व शरीर) के बिना केवल मन से ही पुण्य कर्म करते हैं। उनके प्रत्येक पुण्य कर्म प्राणी मात्र के लिए होते हैं अर्थात् वे राग, द्वेष व मोह को त्यागकर व्यक्ति विशेष को छोड़ कर प्राणी मात्र के लिए करते हैं। मानसिक पुण्य कर्म करने की प्रक्रिया इस प्रकार है कि आध्यात्मिक व्यक्ति समय निकाल कर स्वयं को एकान्त करके मन में प्राणी मात्र को आत्मवत् (स्व आत्मा जैसा सब आत्माओं को मानना) देखता हुआ सब को अपना मित्र बनाता है, ब्रह्माण्ड में उसका कोई शत्रु नहीं होता। ऐसी स्थिति में उसके मन में किसी भी प्राणी के प्रति कोई द्वेष-ईर्ष्या-वैरादि नहीं होते हैं। इसका परिणाम यह निकलकर आता है कि वह वाणी और शरीर से कभी द्वेष-वैर युक्त कर्म नहीं करेगा। यह उसी स्थिति में सम्भव है जो शुद्ध ज्ञान को अपना कर मन में केवल पुण्य कर्म ही करे पाप कभी भी नहीं। मित्र बनाना एक उदाहरण मात्र है। हम वाणी व शरीर से जो-जो पुण्य कर्म करते हैं, उन-उन को भावना मात्र से मन-मन में करते जाये। ऐसा करने से मनुष्य का जीवन ही बदल जायेगा। वह व्यक्ति कभी किसी को कष्ट-दुःख-पीड़ा नहीं देगा। इस प्रकार मनुष्य ब्रह्माण्ड में उत्कृष्ट बन सकता या बनता है। इसके विपरीत करने से वही निकृष्ट बन सकता या बन जाता है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

मनुष्यों को चाहिये कि पुरुषार्थ से विद्या का सम्पादन, विधिपूर्वक अन्न और जल का सेवन, शरीरों को निरोग और मन को धर्म में निवेश करके सदा सुख की उन्नति करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.१४

वैदिक यन्त्रालय का संक्षिप्त विवरण

अजमेर स्थित 'वैदिक यन्त्रालय' परोपकारिणी सभा के स्वामित्व में राजस्थान का ही नहीं अपितु देश का प्रतिष्ठित मुद्रणालय रहा है। यह महर्षि स्वामी दयानन्द द्वारा संस्थापित है।

महर्षि को किन परिस्थितियों में इसकी स्थापना करनी पड़ी, अभी तक इस पुस्तकालय ने आर्ष-साहित्य के मुद्रण में क्या भूमिका निभायी आदि ऐतिहासिक महत्त्व की जानकारी, परोपकारी के सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है।

-सम्पादक

वेद भाष्य करने के विचार से महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अयोध्या नगर के सूर्य बाग में भाद्रपद शु. प्रतिपदा सं. १९३३ वि. को ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का आरम्भ किया। इसे सर्वप्रथम बनारस लाजर्स कम्पनी के प्रेस में छपने को दिया और एक बंगाली सज्जन को अपनी ओर से मुन्शी बनाकर लाजर्स कम्पनी में भेजा। परन्तु उन महाशय से जब कार्य ठीक-ठीक न चला तब कुछ काल तक तीस रुपया मासिक उक्त कम्पनी को देकर भूमिका की छपाई का कार्य पूरा कराया।

पीछे वेद भाष्य के मासिक अंकों की छपाई के जब उक्त कम्पनी ने अधिक धन माँगा तो स्वामी जी महाराज ने बा. हरिश्चन्द्र चिन्तामणि को प्रबन्धकर्ता नियत कर निर्णय सागर प्रेस बम्बई में वेद भाष्य छपाने के लिये भेजा। श्री चिन्तामणि जी बम्बई में रुग्ण हो गए और वहाँ अधिक रहना स्वीकार नहीं किया। तब स्वामी जी महाराज ने अपने निजी प्रेस खोलने की बात प्रयाग निवासी रा.ब. पं. सुन्दरलाल जी आदि से की और बनारस उपयुक्त स्थान समझ कर अपने निज कर कमलों से माघ शु. २ गुरुवार सम्वत् १९३६ वि. को वैदिक यन्त्रालय की स्थापना की। उस समय राजा जयकृष्ण दास जी सी.आई.ई. ने दो बक्स भरे हुए टाइप दिया और अन्य सामान मुन्शी बख्तावर सिंह जी कलकत्ता से ले आये। स्वामी जी महाराज ने कचहरी में जाकर अपने नाम से प्रेस का डिक्लेरेशन दिया और मुन्शी बख्तावर सिंह जी को प्रबन्धकर्ता नियत किया, परन्तु उनसे नियम पूर्वक कार्य न चल सकने पर लाला शादीलाल के सुपुर्द कार्य किया।

बनारस में ठीक-ठीक कार्य न चलने पर राय बहादुर पं. सुन्दरलाल जी के इस आश्वासन पर कि यदि यन्त्रालय प्रयाग लाया जाय तो वे देख-रेख कर लेंगे। चैत्र शु. २ सं. १९३८ वि. को प्रेस का सब सामान प्रयाग लाया गया। उस समय उसके प्रबन्ध कर्ता लाला शादी लाल जी ही थे, परन्तु वे देवनागरी नहीं जानते थे और स्वामी जी महाराज की हार्दिक इच्छा सर्वकार्य देवनागरी में हो ऐसी थी अतएव पं. ज्वालादत्त जी को प्रबन्धकर्ता नियत किया। दो मास के पश्चात् पं. दयाराम जी प्रबन्धकर्ता नियत हुए। आपने चौदह मास कार्य किया। पश्चात् वे रा.ब. पं. सुन्दरलाल जी के साथ रंगून चले गए और २/७/१८८२ से मुन्शी समर्थदान जी के सुपुर्द कार्य हुआ। मई सन् १८८३ में स्वामी जी महाराज ने सात सभासदों की प्रबन्धकर्तृ सभा बनाई और इसी वर्ष आप परम पद को प्राप्त हो गए।

मुन्शी समर्थदान जी ने मार्च सन् १८८६ में त्याग पत्र दे दिया और पं. भीमसेन जी उनके स्थान पर कार्य करने लगे जो जुलाई सन् १८८७ तक कार्य करते रहे। पं. सुन्दरलाल जी ने दिसम्बर सन् १८८९ में अधिष्ठाता पद से त्याग पत्र दे दिया, तब श्रीमती परोपकारिणी सभा ने यन्त्रालय का प्रबन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के आधीन कर दिया जिसने श्री शिवदयाल सिंह जी को प्रबन्धकर्ता नियत किया जो, अगस्त सन् १८९० तक कार्य करते रहे। इसी वर्ष श्रीमती परोपकारिणी सभा ने वैदिक यन्त्रालय की प्रबन्धकर्तृ सभा का निर्माण किया जो अप्रैल सन् १८९१ तक रही। इसकी ओर से भक्त रैमल दास जी प्रबन्धकर्ता का कार्य करते रहे। आपने सितम्बर सन् १८९१ में त्याग पत्र दिया।

श्रीमती परोपकारिणी सभा के २८ दिसम्बर सन् १८८८ के निश्चय के अनुसार एक मार्च सन् १८९१ को यन्त्रालय अजमेर लाया गया, जिस समय इसकी पूँजी पाँच हजार रुपये लगभग थी। तीन हेण्ड प्रेस थे जिससे छपाई का कार्य होता था।

सन् १९१६ तक छपाई हेंड प्रेसों से ही होती थी। सन् १९२० में एक सिलेण्डर मशीन और एक ट्रेडिल मशीन ४८००/- रुपये में मंगाई गई और इनके चलाने के लिए आयल इंजिन लाया गया। सन् १९२३ में दो टाइप कास्टिंग मशीनें १४२५/- में और एक सिलेण्डर मशीन सुपर रायल साइज की ६८९२/- में आयी। फिर सन् १९२४ में एक

सिलेण्डर रायल साइज की बम्बई से मंगाई गई ४०३७/- में। सन् १९२७ में अजमेर का मिशन प्रेस टूटा उस समय उसका बहुत-सा सामान यन्त्रालय ने लिया जिसमें एक सिलेण्डर मशीन १०००/- में, एक ट्रेडिल ३००/- में और अन्य हेण्ड प्रेस आदि लिए गए। सन् १९२८ में एक बड़ी ट्रेडिल २५५०/- में ली गई। सन् १९३० में इंजिन हटाकर बिजली की मोटर लगाई गई और सब मशीने बिजली से चलने लगीं। सन् १९३२ में मोनोपोल ट्रेडिल ११९१/- और सन् १९३३/- में रेकर्ड सिलेण्डर मशीन ६६५०/- फोटो मशीन ४८१९/- में ली गई और सन् १९४१ में प्लेनेटा सिलेण्डर मशीन ८६१५/- और टाइप कास्टिंग मशीन ५००/- में ली गई। इनके अतिरिक्त दो कटिंग मशीने, ब्लॉक मेकिंग मशीने डाइ एम्बोसिंग आदि अन्य मशीने समय-समय पर ली गईं जिनका मूल्य लागत के अनुसार लगभग पचपन हजार होता था, जो कि सब डिप्रिसिएशन रूप में जमा हो गया और अब मैशिनरी का मूल्य बैलेंसशीट के अनुसार कुछ नहीं रहा है।

नोट:- ऊपर जिन रिकॉर्ड और प्लेनेटा मशीनों का जिक्र आया है, वे आज अगर नई मोल ली जावें तो शायद बीस-बीस हजार से कम में न मिलें।

वैदिक यन्त्रालय के जीवन में आर्थिक दृष्टि से अनेक बार उतार चढ़ाव आये और सन् १९४३ तक यन्त्रालय की अवस्था यह रही कि लोगों के डिपोजिट ब्याज पर ले रखा था। यह डिपोजिट की राशि सन् १९३६ में बासठ हजार तक पहुँच गई थी। सन् १९४३ में सब डिपोजिट वापस करने में यन्त्रालय समर्थ हो सका और सन् १९४७ तक इस अवस्था को पहुँच गया कि एक लाख तिरपन हजार रुपये श्रीमती परोपकारिणी सभा के कोष में जमा करा दिया।

इस समय तक जो पुस्तकें छाप कर दिया उनमें मुख्य-मुख्य का विवरण इस प्रकार है:-

सत्यार्थ प्रकाश	३,०५,०००
संस्कार विधि	१,६८,०००
ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका	३०,०००
आर्याभिविनय	६०,०००
पंच महायज्ञ विधि	९७,०००
यजुर्वेद भाषा भाष्य	११,०००
व्यवहार भानु	४५,०००
आर्योद्देश्यरत्नमाला	२,६०,०००
दयानन्द ग्रन्थमाला २ भागों में	१०,०००

इनके अतिरिक्त चारों संहिताएँ, वेदांग प्रकाश, वेद भाष्य, छान्दोग्य तथा बृहदारण्यक उपनिषद्, अष्टाध्यायी भाष्य आदि ग्रन्थ छपे।

निवेदक

भगवान स्वरूप, प्रबन्धकर्ता

आस्था भजन (चैनल)
पर प्रवचन

स्वामी रामदेव जी ने वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए अपने चैनल पर दो घण्टे का समय देकर वैदिक विद्वानों के प्रवचन की शृंखला प्रारम्भ की है। उसी क्रम में परोपकारिणी सभा द्वारा भी वैदिक विद्वानों के प्रवचन के प्रसारण की योजना बनाई गई। इस हेतु विगत ८-१० माह से ऋषि उद्यान परिसर में विडियो रिकॉर्डिंग का कार्य चल रहा है।

अब स्वामी रामदेव जी द्वारा इन प्रवचनों का 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ८ बजे तक प्रसारण प्रारम्भ कर दिया गया है। जिसके अन्तर्गत **७.०० से ७.२०** तक **डॉ. धर्मवीर जी** के वेद-प्रवचन तथा **७.३० से ७.५०** तक **स्वामी विष्वङ् जी** के योगदर्शन विषयक प्रवचन सुने जा सकते हैं।

इस कार्य के लिए सभा और समस्त आर्यजगत् की ओर से स्वामी रामदेव जी का धन्यवाद करते हैं और आभार मानते हुए प्रभु से उनके इस सामर्थ्य और भावना को बनाये रखने की कामना करते हैं तथा उनके दीर्घायुष्य व उत्तम स्वास्थ्य की प्रभु से प्रार्थना करते हैं।

सभी धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

कुछ तड़प-कुछ झड़प

- राजेन्द्र जिज्ञासु

पिछले अंक का शेष भाग.....

४. "And indeed it is, the Mother of the book with Us, exalted and bull of wisdom." और पुस्तकों की माता हमारे पास है, गौरवपूर्ण महिमा वाली तथा बुद्धि से परिपूर्ण।

मित्रो! बुद्धि से भरी, महिमा वाली वह पुस्तकों की माता जो पुस्तक है- वह किसके पास है? विश्व में एक ही पुस्तक है जिसे माता माना व कहा गया है और वह है 'वेद माता'। पुस्तकों की माता का ध्यान आपको आ गया, यह हमारी बहुत बड़ी उपलब्धी है।

५. ''पक्षियों के समूह अपनी चौंचों में कंकर लिये आये''[५] क्या आज किसी इस्लामी विश्वविद्यालय अथवा चिड़ियाघर में आप लोग ऐसे पक्षियों की चर्चा करते व देखते हैं? आपको सत्य तथा असत्य की पहचान करवा दी, हमने यही पाया है। कुरान में जिन्नों का उल्लेख है। जिन्न भूत सब ऋषि ने भगा दिये। टी.बी., कैंसर, शुगर आदि अस्पताल सर्वत्र हैं। जिन्न निकालने वाले अस्पताल तथा डॉक्टर न अरब देशों में, न ईरान में तथा न पाकिस्तान में हैं। हमने आपको जिन्न मुक्त कर दिया है। हमसे आपने यह लाभ पाया।

६. कुरान के भाष्यकार, व्याख्याकार तथा मर्मज्ञ यह खुलकर स्वीकार कर रहे हैं कि कुरान में पैगम्बर के किसी भी चमत्कार का उल्लेख नहीं। आप चमत्कारों के अन्धविश्वास से मुक्त हो गये- हमने बहुत कुछ पा लिया।

७. अल्लाह आसमानों पर था और बन्दे धरा पर। वह बन्दों से दूर और बन्दे उससे दूर। अब आप घोषणा कर रहे हैं कि अल्लाह चाहे भी तो हमें नहीं छोड़ सकता। सच बतावें कि यह कथन किस आयत का अनुवाद है? डट कर कहो कि यह ऋषि दयानन्द ने सुझाया व बताया। आप समझ गये, हमने यही पाया है। आगे फिर कभी बहुत कुछ बतायेंगे।

लुप्त सम्पदा की खोजः- दण्डी गुरु विरजानन्द जी का जीवन एक ही कवि ने पद्य में लिखा और वे थे श्री विद्याभूषण जी विभु। श्री महेन्द्रसिंह आर्य ग्राम- चामघेड़ा के सहयोग तथा प्रेरणा से यह प्रेस में दे दिया गया। इन पंक्तियों के छपने तक 'विरजानन्द विजय' काव्य पाठकों तक पहुँच जावेगा। परोपकारी के माध्यम से विभु जी की अन्य पुस्तकों की खोज का सभा ने प्रयास किया। जितनी भागदौड़ कर सकते थे की। बहुत थोड़ी सफलता मिली। हर्ष का विषय है कि 'विरजानन्द विजय' के छपते-छपते पुरुषार्थी ऋषि भक्तों ने विभु जी के गद्य-पद्य साहित्य की आठ सौ पृष्ठ की प्रकाशित सामग्री खोज ली है। दानी सज्जन व समाजें सभा को आर्थिक सहयोग करें तो इनमें से दो तीन पुस्तकों का सभा प्रकाशन कर सकेगी। अभी इससे अधिक कुछ कहना ठीक नहीं होगा।

बिन्दु उठाये नहीं जातेः- समय-समय पर आर्य विद्वान् कई मौलिक तथा महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर जनहितकारी ठोस बातें आर्य जनता के सामने लिखते व कहते आये हैं, परन्तु आर्यसमाज अपनी पूरी शक्ति से उन बिन्दुओं को उठाता नहीं। यह बहुत बड़ा दोष है। राजा राममोहन राय का नाम कुछ अंग्रेजी पठित वक्ता लेखक बहुत लेते हैं, परन्तु आर्यसमाज ने पं. चमूपति जी द्वारा उठाये गये इस बिन्दु को प्रचारित नहीं किया कि मरते समय श्री राममोहनराय के शरीर पर यज्ञोपवीत था। मैंने पण्डित जी का वह लेख फिर छपवा दिया, परन्तु किस किसने लाभ उठाया। आश्चर्य तो यह है कि ब्रह्म समाज वालों ने श्री राममोहनराय के समग्र साहित्य के साथ जो उनका चित्र छापा है, उसमें यज्ञोपवीत नहीं दिखाया गया।

मैंने दोंगड़ा अहीर महेन्द्रगढ़ के उत्सव पर बोलते हुए कहा था कि आपके क्षेत्र से तीन आन्दोलन ऋषि ने छेड़े जिनके दूरगामी परिणाम निकले। वहाँ के एक भाई को एक आन्दोलन भूल गया। उसने मिलकर फिर पूछा। मुझे यह बात अच्छी लगी। मैंने कहा परोपकारी में लिखूँगा। इनके प्रचार से आर्यसमाज की देन जन-जन तक जायेगी।

१. गोशाला आन्दोलन का जन्म ऋषि के रेवाड़ी आगमन के समय वहीं से हुआ था।

२. महिलाओं के उत्थान का आन्दोलन भी ऋषि की इसी यात्रा से बहुत आगे निकल गया। राव युधिष्ठिर सिंह जी की पत्नी पूरे विश्व में जनतान्त्रिक प्रणाली से एक सशक्त संगठन आर्यसमाज की प्रधाना चुनी गईं। पूरे विश्व में वह पहली स्त्री थी, जिसे किसी संस्था ने अपना प्रधान चुना।

३. आर्यसमाज के आन्दोलन का इतिहास इसके भजनोपदेशकों के बिना अधूरा है। भजनोपदेशकों ने आर्यसमाज को जन आन्दोलन बनाया। इसमें हरियाणा के भजनोपदेशकों का विशेष योगदान है। रेवाड़ी से पं. बस्तीराम

आगे आये। बस फिर क्या था, चौ. नवलसिंह जी, स्वामी भीष्म जी, श्री ईश्वरसिंह जी, स्वामी नित्यानन्द जी, स्वामी बेधड़क जी आदि कितने कर्मठ सपूतों ने एक इतिहास बना डाला। हमारे अनेक भजनीक स्वराज्य संग्राम में जेलों में यातनायें सहते रहे, चन्द्र कवि, कुँवर सुखलाल, पं. हजारीलाल, स्वामी नित्यानन्द, स्वामी बेधड़क ने बड़े कष्ट सहे। हम यह बिन्दु नहीं उठाते। हमारे भजनोपदेशक स्वराज्य संग्राम में सात-आठ बार जेल गये। कोई इसका महत्त्व तो समझे।

सादगी, तपस्या व नेताः- आजकल मीडिया में राजनेताओं की सादगी, त्याग व तपस्या की बहुत चर्चा छिड़ी है। लेखक राजनेता तो नहीं, इतिहास का पुराना विद्यार्थी है। भारत में तो सादगी व चरित्र बड़प्पन का अभिन्न अंग था ही। तप हमारे यम-नियमों में से एक है। जो फांसियों पर झूल गया यथा कन्हाईलाल, रोशनसिंह, भगतसिंह, चापेकर बन्धुओं में से कौन सादा नहीं था? पुराने नेता अधिकांश तपस्वी थे। विधानसभा सदस्य बनकर आचार्य नरदेव ने एम.एल.ए. के रूप में प्राप्त पाँच वर्षों का पूरा लेखा-जोखा जनता के सामने रखा। स्वामी रामेश्वरानन्द जी सांसद बने तो बंगले में नहीं आर्यसमाज बाजार सीताराम में रहते थे। पं. नरेन्द्र जी हैदराबाद ने एम.एल.ए. बनकर आर्यसमाज मन्दिर के एक कमरे में ही निवास रखा। ठाकुर यशपाल सिंह सम्पन्न कृषक थे। एम.एल.ए. बनकर घोड़े पर सवार होकर विधानसभा लखनऊ जाते थे। कामराज मुख्यमन्त्री थे तो पैदल ही सचिवालय चले जाते थे। सरदार पटेल की पुत्री मणिबेन भारत के गृहमन्त्री अपने पिता के वस्त्रों के लिए प्रतिदिन चरखा चलाकर सूत कातती थी। डॉ. लोहिया तथा कई साम्यवादी नेता त्यागी तपस्वी थे। श्री लालबहादुर शास्त्री तथा चौ. चरणसिंह की सादगी तथा शुचिता को कौन नहीं जानता? पं. दीनदयाल कभी विधायक सांसद तो नहीं बने, परन्तु ऊँची कोटि के त्यागी तपस्वी नेता थे। देश के स्वतन्त्र होने पर जलियाँवाला बाग के हीरो (पंजाब के पहले स्पीकर) डॉ. सत्यपाल जी को मैंने कादियाँ में एक सीधे-सादे समाजसेवी के रूप में देखा। भोगविलास तो स्वतन्त्र भारत में दिल्ली के सत्ताधारियों ने देश को सिखाया। गरीबी हटाओ के नारे लगाने वालों ने सादगी को देश निकाला दिया। कॉलेजों में कपल शो दम्पति प्रतियोगितायें होने लगीं। स्कूलों में बहुत सजधज कर स्मार्ट बनकर आना अनिवार्य हो गया। वैसे पंजाब की एक पूर्व मन्त्री बहिन लक्ष्मीकान्त चावला कभी बंगलों-कोठियों में नहीं रही। आज भी एक कमरे में रहती है। मेरा तात्पर्य यह है कि अपनी सादगी का ढोल पीटने वालों को इतिहास पढ़कर इतिहास दर्पण में अपना मुख देखना चाहिए। विश्व का पहला क्रान्तिकारी जिसका केस विश्व न्यायालय में पहुँचा, स्वातन्त्र्य वीर सावरकर दादर में एक छोटे से मकान में रहता था। उसकी तपस्या को दर्शनी हुण्डियाँ क्या जाने? सच बात तो यह है कि दक्षिण, पश्चिम व पूर्वी भारत के प्रायः सब राजनेता सादगी पसन्द थे।

समाज सेवा के लिए समर्पित हो जाओः- मेरे कानों में यह उत्साहवर्द्धक समाचार पड़ा है कि कुछ समर्पित, कर्मठ और उच्च कोटि के आर्य विद्वान् संन्यास लेकर वैदिक धर्म प्रचार में और सक्रिय होकर आर्यसमाज का गौरव बढ़ायेंगे। कई बार दुःख भरे हृदय से लोग कहते सुने गये कि अब योग्य गम्भीर, तपस्वी साधु कहाँ हैं? सादगी तथा साधु दो विरोधी बातें हैं। साधु अरबपति बन रहे हैं। धर्म प्रचार कौन करे? नारायण स्वामी जी का वंश फूले-फले-हमारी यही कामना है। जिनके काम धन्धे निपट गये हैं, ६०-६५ वर्ष से ऊपर के आर्य पुरुष धर्म प्रचार के लिए समर्पित हो जावें। कहीं भी रहें, परन्तु केवल धर्म प्रचार की सोचें तो कुछ बनेगा।

डॉ. धर्मवीर देश के दूरस्थ भागों में बिन बुलाये शिथिल पड़ चुके समाजों में जान फूँकने के लिए भ्रमण करते रहते हैं। सोनीपत के पं. रामचन्द्र आर्य दिनरात वाणी व लेखनी से प्रचार में लगे रहते हैं। उत्तराखण्ड में महात्मा नारायण स्वामी जी के चरण चिह्नों पर चलकर इतिहास बनाने लगे। दुर्बलताओं का बोझा ढोते-ढोते मैं प्रातः से सायं तक ऋषि ऋण चुकाने में लगा रहता हूँ। बहुत कुछ किया है, परन्तु मेरे अरमान अभी भी पूरे नहीं निकले। अन्तिम श्वास तक पं. लेखराम जी का कार्य करूँगा तथा यही लगता है कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, पं. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, पं. नरेन्द्र जी के प्यारे समाज की जितनी सेवा करनी चाहिए, वह मुझसे नहीं हो सकेगी। एक-एक आर्य की यह तान होः-

रंगा लहू से लेखराम के रस्ता वही हमारा है

टिप्पणियाँ

१. द्रष्टव्य Father India, पृष्ठ २३-२४

२. द्रष्टव्य फतह उलहमीद पृष्ठ ३९५

३. वही पृष्ठ ५५ देखें।

४. Quran saheeb International Page 41.

५. द्रष्टव्य वही, पृष्ठ ६८८

६. द्रष्टव्य फतह उलहमीद, पृष्ठ १०१९

इतिहास साक्षी है

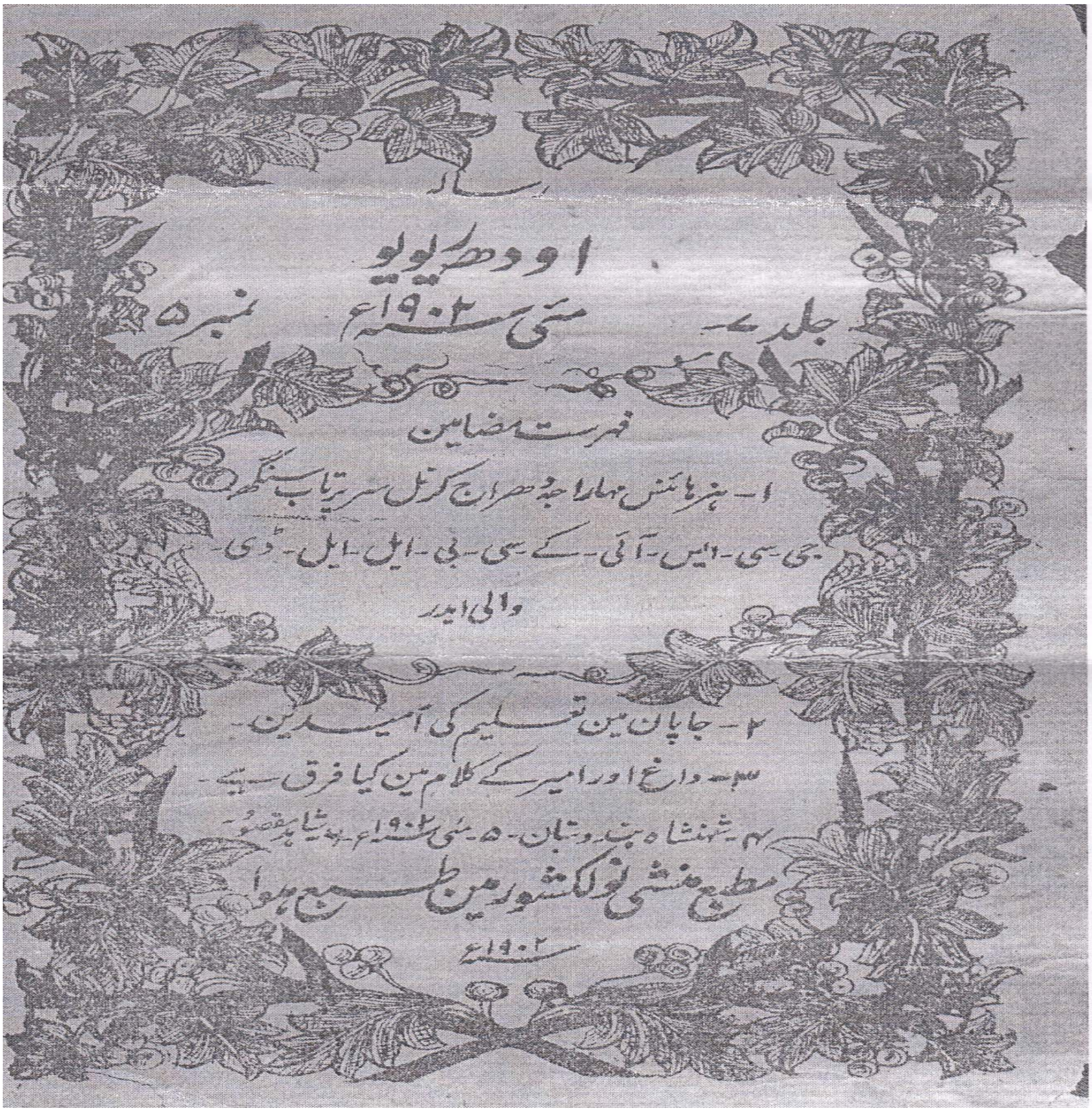

رسالہ

اودھ ریویو

جلد ۷ - مئی سنہ ۱۹۰۲ء نمبر ۵

فہرست مضامین

۱- ہز ہائنس مہاراجہ مہراج کرنل سر پرتاب سنگھ

جی - سی - ایس - آئی - کے - سی - بی - ایل - ایل - ڈی

والی ایدر

۲- جاپان مین تعلیم کی امیدین

۳- داغ اور امیر کے کلام مین کیا فرق ہے

۴- شہنشاہ ہندوستان - ۵ - مئی سنہ ۱۹۰۲ء بہ تشابہ مقصود

مطبع منشی نولکشور مین طبع ہوا

سنہ ۱۹۰۲ء

अवध रीवियु उर्दू मासिक का मई सन् १९०२ का दुर्लभ अंक। इसमें प्रथम कर्नल प्रतापसिंह इडर जोधपुराधीश का उन्हीं के द्वारा भिजवाया गया जीवन-परिचय छपा है। इसे पढ़िये, इसमें ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज की कतई चर्चा नहीं। ऋषि के जोधपुर आगमन का उल्लेख नहीं। अंग्रेज भक्ति, शिकार की घटनायें व पोलों की कहानियाँ पढ़ लीजिये। इससे क्या समझा जावे?

- **'जिज्ञासु'**

ہز ہائنس مہاراجہ دھراج کرنل سر پرتاب سنگھ

جی-سی-ایس-آئی-کے-سی-بی-ایل-ایل-ڈی-

والی ایدر

ناظرین خوش آگین نے اپریل کے رسالہ مین ہز ہائنس راج راجیشور مہاراجہ دھراج سر آمد راجگان سری سردار سنگھ جی بہادر والی جودھپور کی سوانح عمری ملاحظہ فرمائی ہوگی- آج ہم ہز ہائنس مہاراجہ دھراج کرنل سر پرتاب سنگھ جی-سی-ایس-آئی-کے-سی-بی-ایل-ایل-ڈی- کے مختصر حالات اور تصویر پُرتنویر شائع کرتے ہین-

سر پرتاب سنگھ ہز ہائنس والی جودھپور کے عم مکرم ہین حضور ممدوح ایک عرصہ تک ریاست جودھپور کے وزیراعظم رہے ہین اور جس خیر خواہی اور قابلیت کے ساتھ انھون نے اپنے اہم فرائض انجام دئے ہین اسکا نہ صرف سابق مہاراجہ بلکہ موجودہ فرمانروائے جودھپور اور گورنمنٹ ہند نے بھی اعتراف کیا ہے- رعایا مین بھی آپ سے

[illegible]

۳

کی اسکے بہمہ وجوہ مستحق تھے۔

اگلی دفعہ بھی اعلیٰ حضرت ملک معظم ایڈورڈ ہفتم کی تقریب جشن تاجپوشی مین تشریف لے گئے ہین۔

حال مین ہز اکسلنسی لارڈ کرزن نے جو امپیریل کیڈٹ کور قائم فرمائی ہی اسکے آپ کمانیر مقرر ہوئے ہین۔

گورنمنٹ انگلشیہ نے آپ کے حقوق کی جو جو قدر افزائیان فرمائی ہین ان سب سے بڑھکر یہ قدردانی ہی کہ آپ کو ایدر کی ریاست مرحمت فرمائی اور اب کرنل سر پرتاب سنگھ ایک فرمانروا کی حیثیت سے ایدر کی گدی پر جلوہ افروز ہین۔

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर **'मन्त्री परोपकारिणी सभा'** अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने,

जयपुर

रोड, अजमेर।

IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC - SBIN0007959

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (द्वितीय स्तर)

दिनांक १५ से २२ जून २०१४

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे। साथ ही पढ़ाये गये विषयों की लिखित परीक्षा व आपके द्वारा पालन किये गये शिविर के अनुशासन का भी आंकलन किया जायेगा, इसी आधार पर प्रमाण–पत्र भी दिये जायेंगे। इस दिशा में अब तक दो शिविरों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर सफल प्रयास किया गया है। **इस द्वितीय स्तर के शिविर में वे ही भाग ले सकेंगे, जिन्होंने प्राथमिक स्तर वाले शिविर में भाग लिया है।** इस शिविर में प्राथमिक स्तर वाले शिविर की अपेक्षा अधिक सूक्ष्मता से विषयों का अनुभव करवाया जाएगा और वैसा ही सूक्ष्मता से, कठोरता से नियम व अनुशासन होगा।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. दिनचर्या के कुछ भाग में आकृति मौन भी अनिवार्य होगा।
३. प्रार्थी की न्यूनतम दसवीं के स्तर की योग्यता अनिवार्य है। इस हेतु प्रमाण–पत्र की प्रतिलिपि लाना आवश्यक है।
४. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
५. शारीरिक व मानसिक सात्विकता के लिए यथासम्भव भोजन की मात्रा निश्चित होगी।
६. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
७. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
८. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
९. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
१०. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
११. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
१२. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१३. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
१४. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से

पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मंत्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १६ से २३ मई, २०१४ **आर्यवीर शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४४३६०३१

२. २४ से ३१ मई, २०१४ **संस्कृत सम्भाषण शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४७०९४९४

३. १ से ८ जून, २०१४ **आर्य वीराङ्गना शिविर,** सम्पर्क- ०९४१४४३६०३१

४. १५ से २२ जून, २०१४- **योग-साधना शिविर (द्वितीय स्तर),** सम्पर्क- ०१४५-२४६०१६४

विशेष- परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित पूर्व दो ध्यान-प्रशिक्षक-प्रशिक्षण शिविरों में प्रथम व उच्च प्रथम श्रेणी प्राप्त प्रशिक्षकों के लिए भी योग साधना शिविर (द्वितीय स्तर) में भाग लेने का अवसर रहेगा।

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक खाता संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक खाता संख्या -10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

।।ओ३म्।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

कौन हैं हम भारतवासी?

– ज्ञानेन्द्र मिश्र

पिछले अंक का शेष भाग.....

कुमार स्वामी थंगराज एवं लालजी सिंह के दल ने पांच ओंगे, पांच ग्रेट अण्डमानी तथा पांच निकोबारी जनजातीय लोगों के माइट्रोकॉन्ड्रिया के डी.एन.ए.का अध्ययन किया। उन्होंने ओंगों एवं अण्डमानी सदस्यों में दो नये हैप्लोग्रुप एम ३१ एवं एम ३२ की पहचान की जो आसपास की जनसंख्याओं में नहीं पाये जाते अर्थात् इनका विकास इन्हीं प्रजातियों में हुआ होगा। इनका निष्कर्ष है कि लगभग ५००००से ७०००० वर्ष पूर्व जब आधुनिक मानव की कुछ टोलियाँ समुद्र में सुदूर निकल गयी होंगी तो मुख्य भू-भाग से इनका सम्पर्क समाप्त हो गया होगा। मुख्य विकास धारा से अलग होने के कारण ये प्रारम्भिक मानव प्रजाति के अवशेष के रूप में बच गये हैं। निकोबारी आदिवासी दक्षिणी एशिया से जेनेटिक रूप से बहुत मिलते जुलते हैं, जिससे ऐसा लगता है कि ये लोग लगभग १८००० वर्ष पूर्व ही यहां पहुँचे होंगे।

मैकाले एवं उनके सहयोगी वैज्ञानिकों ने इण्डोनेशिया के २६० ओरांग असली आदिवासियों का अध्ययन किया। उनके निष्कर्ष भी लगभग इसी प्रकार के है। इस दल ने भी पाया की ओरांग असली में माइट्रोकॉन्ड्रिया के डी.एन.ए. में कुछ ऐसे पहचान चिन्ह हैं जो और कहीं नही पाये जाते, जिससे स्पष्ट है कि ये यहीं इन्हीं लोगों में उत्पन्न हुये हैं। यह समुदाय आदिमानव यात्रा के अवशेष हैं। इस दल ने और भी निष्कर्ष निकाले। इनका आकलन है कि सबसे प्राचीन आधुनिक मानव प्रजाति के पूर्वज लगभग दो लाख वर्ष पूर्व हुए होंगे। हेप्लोग्रुप एल ३, जिससे गैर-अफ्रीकी हेप्लोग्रुप एम एवं एन तथा एन के अन्तर्गत आर की उत्पत्ति लगभग ८४००० वर्ष पूर्व हुई होगी। हेप्लोग्रुप एम एवं एन लगभग ६३००० तथा आर लगभग ६०००० वर्ष पुराने हैं।

पापुआ एवं ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों के अध्ययन भी लगभग समान निष्कर्ष देते हैं कि आधुनिक मानवों का समूह पूर्वी अफ्रीका से लगभग ८५००० वर्ष पूर्व चला होगा जिससे एम,एन एवं आर हैप्लोग्रुप की उत्पत्ति हुई होगी, जो हिन्द महासागर के तट पर लगभग ६६०००वर्ष पूर्व पहुँचा होगा और वहाँ से ऑस्ट्रेलिया लगभग ६३००० वर्ष पूर्व आया होगा। इस तरह भारत से आस्ट्रेलिया पहुँचने में उनको ३००० वर्ष लगे। लगभग १२००० किलोमीटर की दूरी उन्होंने ४ किलोमीटर प्रति वर्ष के दर से तय की होगी। वैज्ञानिक भारत से ऑस्ट्रेलिया तक का इस त्वरित यात्रा को 'ऑस्ट्रेलिया एक्सप्रेस' का नाम देते हैं।

मैकाले एवं उनके साथी वैज्ञानिक अपने शोध पत्र में एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य की ओर संकेत करते है। पश्चिमी यूरोप में हैप्लोग्रुप एन एवं आर की विभिन्नताओं का स्तर अधिक है, जो उनके ४०००० की स्थापित आयु से अधिक प्राचीन होने की ओर संकेत करता है। परन्तु वहाँ हैप्लोग्रुप एम नहीं पाया जाता। लेकिन वहाँ पाये जाने वाले माइट्रोकॉन्ड्रिया के डी.एन.ए. में संस्थापक समूह की आयु भारतीय संस्थापक आयु के काफी नजदीक है, जो यह संकेत देती है कि पश्चिमी यूरोप के लोग दक्षिणी मार्गों से आये लोगों की ही एकशाखा की संतान हैं, जो अपनी मूल शाखा से हटने के बाद हिमयुग की समाप्ति पर धीरे-धीरे ६.७ किलोमीटर प्रति वर्ष की रफ्तार से पश्चिमी यूरोप पहुँचे।

साइन्स ०६ जुलाई २००७ के लेख में भारतीय, ब्रिटिश, अमरीकी एवं ऑस्ट्रेलियाई वैज्ञानिकों ने दक्षिण भारत में आधुनिक मानवों की उपस्थिति के प्रमाण प्रस्तुत किये हैं। उन्होंने ७४००० वर्ष पूर्व इन्डोनेशिया में आये टोवा भूकम्प के भारत में स्थित मलबे का अध्ययन किया। उनका यह अध्ययन स्थल आन्ध्र प्रदेश के करनूल जिले में ज्वालापुरम् नामक स्थान पर है। भूकम्पीय राख इन्डोनेशिया से उड़कर भारत के कई क्षेत्रों में बिखर गयी और जिसकी ज्वालापुरम् में ढाई मीटर मोटी राख की सतह मिली है। क्वार्ज के कणों से उनकी उम्र निकाली गई। निचली सतह लगभग ७७००० वर्ष पूर्व की पायी गयी। इसमें मिले औजार तथा ऊपरी सतह पर मिले औजार आपस में पूरी तरह मेल खाते हैं। अर्थात् टोवा के भूकम्प के पहले तथा बाद के औजारों की तकनीकी समानता परिलक्षित होती है। इतना ही नहीं औजारों की ये तकनीकी यूरेशिया में पायी गयी तकनीकी से अधिक मिलती है। वैज्ञानिकों का स्पष्ट विचार है कि ये प्रमाण साबित करते हैं कि टोवा भूकम्प के समय आधुनिक मानव भारत में निवास करते थे तथा वे इतने समर्थ थे कि इतने बड़े पर्यावरणीय परिवर्तन के बाद भी

बचे रह गये।

भारत में प्राचीन काल में आधुनिक मानव का प्रवेश लगभग ७४००० वर्ष पूर्व माना जा रहा है। इन प्राचीनतम मानवों का कुछ अवशेष अण्डमान निकोबार के आदिवासी हैं। भारतवर्ष मानव विकास की महत्वपूर्ण स्थली रहा है, यहाँ पर विकसित समुदाय के कुछ लोग भी वापस लौटे होंगे क्योंकि अफ्रीकी लोगों में भी भारतीय या एशियाई मार्कर मौजूद है।

मानव विज्ञान में एक कहावत है कि 'एक भाषा एक जीन' अर्थात् भाषायी रूप से समान लोग या एक भाषा परिवार के लोग लगभग एक बड़े परिवार के सदस्य होते हैं। भाषायी समानता आनुवंशिक समानता के लगभग बराबर तो नहीं है, पर समानता का स्पष्ट संकेत अवश्य है। इसके पीछे एक मात्र कारण मानव स्वभाव है। सामान्यत: जब कोई अपने जीवन साथी या जीवन संगिनी की तलाश करता है तो भाषायी सीमा से बाहर नहीं जाता। हजारों वर्ष पूर्व जब सामाजिक व्यवस्था मूलत: कबीलाई रही होगी तो भाषायी सीमाएँ और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती हैं। उस समय आज की तरह बहुत बहुभाषी समाज की सम्भावना नगण्य रही होगी। यह मान्यता कमोवेश विश्व के अन्य भागों में दिखती है। भारत में भारतीय यूरोपीय समूह की भाषाओं के साथ-साथ द्रविड़ समूह की भाषाएँ प्रमुखता से बोली जाती हैं। इसलिए इतिहासकार मध्य एशिया से आए आर्यों के कालक्रम को बहुत महत्त्व देते हैं तथा कभी-कभी द्रविड़ भाषा बोलने वाले लोगों को भारत के मूल निवासी मानने की वकालत करते हैं, पर आधुनिक अध्ययनों से स्पष्ट हो रहा है कि लगभग १०००० वर्ष पूर्व से भारतीय जीन पूल समान है। कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि यदि हम टाइम मशीन को भूतकाल में ले जा सके तो जेनेटिक रूप से आज का उत्तर भारत १०००० वर्ष पूर्व के भारत से बहुत अलग नहीं होगा। अर्थात् भारतीयों में मध्य एशियाई आगन्तुकों का आनुवंशिक रूप से कोई महत्त्व पूर्ण योगदान नहीं रहा है। भारतीयों ने उनकी भाषा एवं सभ्यता को तो अंगीकार किया पर वैवाहिक सम्बन्ध महत्त्वपूर्ण नहीं रहे हैं।

ज्ञानेश्वर चौबे एवं उनके साथी वैज्ञानिक अपने एक शोध पत्र में माइट्रोकॉन्ड्रिया के डी.एन.ए. के अध्ययनों का हवाला देते हुए कहते हैं कि इन अध्ययनों से स्पष्ट है कि पाकिस्तान में बोली जाने वाली द्रविड़ भाषा 'ब्रहुल' के लोग भारतीय द्रविड़ लोगों की तुलना में इन्डो ईरानियों के अधिक नजदीक हैं। भारत में द्रविड़ भाषा के फैलाव को अनदेखा नहीं किया जा सकता। भारत में भाषा के साथ जीन का सम्बन्ध कुछ हद तक ऑस्ट्रो एशियाई भाषा भाषी लोगों में दिखता है। इनमें Y गुणसूत्र का समूह O2a बहुतायत में पाया जाता है जो दक्षिणी पूर्वी चीन से सम्बन्ध को रेखांकित करता है। समुदायों की भाषायें उनके समीपवर्ती समुदायों की भाषा से प्रभावित होती हैं। वैज्ञानिक मुसहर लोगों का उदाहरण देते हैं। इसके लोग उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ तथा मध्यप्रदेश में रहते हैं। ये लोग पहले ऑस्टो एशियाटिक पविार की मुन्डारी भाषा बोलते थे पर अब अधिकांश भारतीय यूरोपीय परिवार की भाषाएँ बोलते हैं। जब इनके माइट्रोकॉन्ड्रियल डी.एन.ए. का अध्ययन किया गया तो ये अपनी समीपस्थ आबादी से बिल्कुल अलग पाये गये। वैज्ञानिक इसे भारतीय संस्कृति का स्पष्ट उदाहरण मानते हैं, जहाँ साथ-साथ रह रहे समुदायों में भाषा,विचार,भोजन एवं वस्तुओं का आदान-प्रदान तो होता है पर वैवाहिक सम्बन्ध नहीं होते।

भारत के कोलकाता, मद्रास, कोयम्बटूर,रायपुर तथा अगरतला संस्थानों के वैज्ञानिकों ने मिलकर भारत में भिन्न-भिन्न जातियों व समुदायों तथा धार्मिक समूहों का अध्ययन किया। इसमें ब्राह्मण,हरिजन,राजपूत,इनिला(आदिवासी), आयंगर, अय्यर, लोध, मधेषी,मुंडा, मुरिया, मुसलमान, संथाल इत्यादि उत्तर भारत एवं दक्षिण भारतीय लोग शामिल किए गए थे। उन्होंने देखा कि विभिन्न जाति,धर्म, वेषभूषा एवं रहन-सहन के बावजूद सकल भारतीय समुदाय में एक या दो पहचान चिन्ह सभी में मिलते हैं। इसका अर्थ यह है कि पूरा भारत एक तरह से एक नारी समूह का वंशज है। अर्थात् यदि माता दर माता पूर्वजों की सीढ़ियाँ चढ़ी जाए तो हजारों वर्ष पूर्व के रिश्ते में सारा भारत मूलत: मौसेरे भाई हैं। पूरा भारत मातृ पक्ष से मूलत: एक है। इसी प्रकार दक्षिण पूर्व एशियाई समुदाय मूलत: दो समुदायों के वंशज हैं एक भारतीय तथा दूसरे मध्य या दक्षिणी चीन में बसे लोग।

वाई गुणसूत्र के अध्ययन से पिता के पूर्वजों के बारे में जानकारी मिलती है। एक अध्ययन में वैज्ञानिकों ने देखा कि आधुनिक पाकिस्तान में पारसी, ईरान से भारत मूलत: मुम्बई तथा वहाँ से पाकिस्तान गए। हजारों लोग चंगेज खां की सेना की संतान हैं। इसी प्रकार विख्यात सिल्क रूट जिसमें चीन एवं यूरोप में रेशम का व्यापार सदियों से चला आ रहा था, के किनारे बसे लोगों का

अध्ययन किया गया। ऐसा देखा गया कि ये मूलतः इन्हीं व्यापारियों की संतानें हैं।

२००६ में प्रकाशित एक शोध पत्र में भारतीय स्टैटिस्टिकल इन्स्टीट्यूट कोलकाता, रशियन एकेडमी ऑफ साइन्स, मास्को, इस्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय, ए.क्यू. खान रिसर्च लैब इस्लामाबाद, रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर, त्रिपुरा विश्वविद्यालय, मद्रास विश्वविद्यालय तथा बाडिया हॉस्पिटल मुम्बई के वैज्ञानिकों ने मिलकर एक विस्तृत अध्ययन किया। इसमें उत्तर भारत से हरिजन, मुसलमान, राजपूत, तथा उत्तर प्रदेशीय ब्राह्मण, उत्तर पूर्व से चकमा, जमतिया, मोग, मीजो तथा त्रिपुरी जन-जातियाँ, पूर्वी भारत से अधिरिया, बागी, गौण जातियाँ तथा रमाधा इत्यादि जनजातियाँ, दक्षिणी भारत से अम्बेडकर, इरूला, रूपनगर अरूयर, काटा, कुरूम्भा, टोडा इत्यादि जातियाँ तथा जनजातियाँ, मध्य भारत से हल्वा कुमार एवं मुरिया जनजातियाँ एवं पश्चिमी भारत से मराठा इत्यादि ७२८ व्यक्ति शामिल थे। इसी तरह पाकिस्तान से हजरा, पठान, बलोच, मकरानी, सिंधी इत्यादि १७६ व्यक्ति, कम्बोडिया चीन जापान एवं साइबेरिया से १७५ व्यक्ति शामिल थे।

इस अध्ययन में देखा गया कि दक्षिण एशियाई निवासियों में मध्य एशिया के जीन पूल का असर बहुत ही कम था। भाषाई, धार्मिक तथा सामुदायिक विभिन्नताओं के बावजूद भारतीय समुदाय में वाई गुणसूत्र के आधार पर जो भी विभिन्नताएँ हैं उनकी उत्पत्ति लगभग १०००० से १५००० वर्ष पहले की है। इनके आंकड़े भारतीय समुदाय में मध्य एशिया से बड़े पैमाने पर लोगों के आने का समर्थन नहीं करते। इन आंकडों के आधार पर इन वैज्ञानिकों का मानना है कि सिन्धु घाटी सभ्यता या द्रविड़ लोगों का अपना अलग इतिहास है और द्रविड़ लोग दक्षिणी भारत में भी फले-फूले होंगे।

एक विचार यह भी है कि भारतीय लोग विशेषतः उपरी जातियों, मध्य एशिया से आए आर्यों की संतान हैं। ये आर्य लोग कृषि एवं भाषा के विकास के साथ-साथ भारतीय भू-भाग में आये होंगे। उपरोक्त अध्ययन निश्चित रूप से आर्यों के बड़े पैमाने पर आगमन का खंडन करता है या कम से कम इनका आगमन १०००० से १५००० वर्ष पूर्व हुआ होगा।

माँ से प्राप्त माइट्रोकॉन्ड्रिया के डी.एन.ए. के अध्ययन के अनुसार भारत में तीन समूह M, N एंव R की प्रधानता है। भारतीय विशिष्ट समूह पड़ोसी यूरोपीय एवं पूर्वी एशियाई लोगों में नहीं पाये जाते। भारत में M समूह वालों की संख्या लगभग ६० प्रतिशत है। सबसे प्रमुख बात यह है कि आनुवंशिक रूप से भाषायी, क्षेत्रीय एवं जातीय आधार पर कोई स्पष्ट विभाजन या वर्गीकरण नहीं मिलता। अर्थात् मातृ पक्ष से लगभग सभी भारतीय एक ही हैं। स्पष्टतः अफ्रीका से निकलने के तुरन्त बाद ही यहाँ आधुनिक मानवों का जत्था आ बसा था और उन प्राचीन लोगों के वंश अभी भी चले आ रहे हैं। उनका किसी स्तर पर न तो विनाश हुआ है और न ही किसी नये समूह द्वारा विस्थापन। दक्षिण एशिया में C, H,J,Rla,R2, L तथा O2a Y गुणसूत्र के हैप्लोटाइप पाये जा रहे है जिससे यह माना जा रहा है कि C5,F, H,एवं R2 समूहों की उत्पत्ति यहीं हुई थी। कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि Rla समूह जो पूर्वी यूरोप तथा मध्य एशिया में भी पाया जाता है, आर्य भाषा तथा आर्यों के आगमन का प्रतीक है, पर अधिकांश वैज्ञानिक अध्ययन इसका विरोध करते हैं। उनका कहना है कि भारत में पाये जाने वाले Rla समूह में विभिन्नतायें ज्यादा हैं, जो इसकी प्राचीनता की प्रतीक है।

इसी प्रकार मध्य एशिया की तुलना में R2 समूह भी अपनी अधिक विभिन्नताओं के चलते भारतीय समुदाय में अधिक प्राचीन प्रतीत होता है। मध्य एशिया एवं ईरान में इसकी उपस्थिति भारत से निकट भविष्य में गए लोगों के कारण हो सकती है। O समूह या इसकी शाखाओं की उत्तर पूर्वी प्रदेशों में उपस्थिति यह बताती है कि ये लोग दक्षिण पूर्वी एशिया से भारत में आये हैं। यह समूह ऑस्ट्रो एशियाटिक तथा तिब्बती बर्मी भाषा समूह में बहुतायत से पाया जाता है।

शेष भाग अगले अंक में.....

पतों में नवीनीकरण व संशोधन की प्रक्रिया

सभी विद्वानों व परोपकारी के सुधी पाठकों से निवेदन है कि अपना नाम, पत्र व्यवहार का पूरा पता (पिन कोड सहित), दूरभाष संख्या और ई-मेल किसी भी माध्यम से भिजवाने का कष्ट करें जिससे कि परोपकारिणी सभा के वर्तमान के पतों में नवीनीकरण व संशोधन की प्रक्रिया में सहयोग मिल सके।

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	वेद संहिताएँ– (केवल मन्त्र)	
१.	ऋग्वेद संहिता (मूल) मन्त्र–	रु.
	वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	५००.००
२.	"यजुर्वेद संहिता"(मूल) मन्त्र	
	वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	१८०.००
३.	यजुर्वेद संहिता (मूल) सजिल्द (साधारण)	१००.००
४.	सामवेद संहिता (मूल) मन्त्र	
	वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	८०.००
५.	अथर्ववेद संहिता (मूल) मन्त्र–	
	वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	३५०.००
६.	चतुर्वेद विषय सूची	४०.००
७.	सामवेद के मन्त्रों की वर्णानुक्रमणिका	२.००
८.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सजिल्द	१००.००
९.	ऋग्वेद के प्रथम बाईस मन्त्रों का भाष्य	५.००
	वेद भाष्य–(संस्कृत एवं हिन्दी, दोनों में भाष्य)	
१०.	ऋग्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१५०.००
११.	ऋग्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१२.	ऋग्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१३.	ऋग्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
१४.	ऋग्वेदभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	२५०.००
१५.	ऋग्वेदभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	६०.००
१६.	ऋग्वेदभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१७.	ऋग्वेदभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१८.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल	
	प्रथम भाग सजिल्द	७०.००
१९.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल	
	द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	६०.००
२०.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल	
	पहला भाग सजिल्द	
२१.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल	
	दूसरा भाग सजिल्द	
२२.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल	
	प्रथम भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	१५०.००
२३.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द	
२४.	ऋग्वेदभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग	
	सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	२००.००
२५.	ऋग्वेदभाष्य दसवाँ मण्डल द्वितीय भाग	
	सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	९०.००
२६.	यजुर्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
२७.	यजुर्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५०.००
२८.	यजुर्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२५०.००
२९.	यजुर्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
	वेद भाषाभाष्य – (केवल हिन्दी भाष्य)	
३०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य का नमूना	५.००
३१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
३२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	२५.००
३५.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	३०.००
३६.	ऋग्वेदभाषाभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	३०.००
३७.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३८.	ऋग्वेदभाषाभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३९.	ऋग्वेदभाषाभाष्य (नवाँ भाग)	
	सप्तम मण्डल पहला भाग (सजिल्द)	२५.००

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
४०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सप्तम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	३५.००
४१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य अष्टम मण्डल (सजिल्द)	
४२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य नवम मण्डल (सजिल्द)	
४३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४५.	यजुर्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१००.००
४६.	यजुर्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३७५.००

स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तण्ड

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
४७.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (पूर्वार्चिक)	
४८.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (उत्तरार्चिक) (दोनो खण्डों का सम्मिलित मूल्य)	४००.००
४९.	अथर्ववेदभाष्य – (काण्ड १ से २०) तीन भाग का एक सेट	

विविध

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
५०.	गोकरुणानिधि (बढ़िया)	५.००
५१.	स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	५.००
५२.	स्वीकारपत्र	३.००
५३.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (हिन्दी)	५.००

सिद्धान्त ग्रन्थ

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
५४.	सत्यार्थप्रकाश (सजिल्द बढ़िया)	१२०.००
५५.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार सजिल्द)	१०.००
५६.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार अजिल्द)	७.००
५७.	आर्याभिविनय (गुटका अजिल्द)	७.००

कर्मकाण्डीय

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
५८.	वैदिक नित्यकर्मविधि	२५.००
५९.	पञ्चमहायज्ञविधि	१२.००
६०.	विवाह–पद्धति	२०.००
६१.	संस्कारविधि (सजिल्द)	७०.००
६२.	हवनमन्त्राः (बड़ा आकार)	५.००

पाखण्ड–खण्डन और शंका–समाधान ग्रन्थ

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
६३.	अनुभ्रमोच्छेदन	
६४.	भ्रमोच्छेदन (साधारण)	४.००
६५.	भ्रमोच्छेदन (बढ़िया)	१०.००
६६.	भ्रान्तिनिवारण	
६७.	शिक्षापत्रीध्वान्त–निवारण (स्वामीनारायण मतखण्डन)	२.००
६८.	वेदविरुद्धमत–खण्डन	१०.००
६९.	वेदान्तिध्वान्तनिवारण	२.००
७०.	शास्त्रार्थ काशी	८.००
७१.	शास्त्रार्थ हुगली (प्रतिमा–पूजन विचार)	६.००
७२.	सत्यधर्म विचार (मेला चान्दापुर)	७.००
७३.	शास्त्रार्थ जालंधर	३.००
७४.	शास्त्रार्थ अजमेर	३.००
७५.	शास्त्रार्थ बरेली (सत्यासत्य विवेक)	८.००
७६.	शास्त्रार्थ मसूदा	५.००
७७.	शास्त्रार्थ उदयपुर	४.००
७८.	शास्त्रार्थ फिरोजाबाद	१०.००
७९.	महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ (सजिल्द)	४०.००

शिक्षा व व्याकरण ग्रन्थ (वेदाङ्ग प्रकाश)

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
८०.	वर्णोच्चारण शिक्षा	१५.००
८१.	सन्धिविषय	
८२.	नामिक	
८३.	कारकीय	१०.००
८४.	सामासिक	
८५.	स्त्रैणताद्धित	
८६.	अव्ययार्थ	५.००
८७.	आख्यातिक (अजिल्द)	१५०.००

शेष भाग अगले अंक में.......

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ- प्रवचन, वेद-पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***- आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***- अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***- गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***- वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***- इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***- योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता
(१६ से ३१ मार्च २०१४ तक)

१. श्रीमती पुष्पा देवी झंवर, ब्यावर, राज. २. श्री कमलकान्त आनन्द, जालन्धर, पंजाब ३. श्रीमती निरू कपूर, जालन्धर, पंजाब ४. श्री मनोज कपूर, जालन्धर, पंजाब ५. डॉ. राजेश पसरिचा, जालन्धर, पंजाब ६. श्री गोकुलचन्द भगत, जालन्धर, पंजाब ७. श्रीमती सुशीला भगत, जालन्धर, पंजाब ८. श्री ऋषभ भगत, जालन्धर, पंजाब ९. श्री रोहित अग्रवाल, जालन्धर, पंजाब १०. श्री राजेन्द्र सिंह, द्वारका, नई दिल्ली ११. श्रीमती प्रमिला शर्मा, गुड़गाँव, हरियाणा १२. श्रीमती प्रेमवती आर्या, अजमेर १३. श्री व्रतमुनि, अजमेर १४. श्री बबन सुन्दर राव, औरंगाबाद, महा. १५. श्री तेजपाल लिलहरे, मलाजखण्ड, म.प्र. १६. श्री रमेश क्षेत्रपाल, अजमेर १७. श्री ईश्वर दयाल माथुर, जयपुर, राज. १८. श्री इन्द्रपालसिंह, टिकरीकला, दिल्ली १९. श्री अजय कुमार श्रीवास्तव, दिल्ली २०. श्री ब्रह्मदेव वेदालंकार, गाजियाबाद, दिल्ली २१. श्री गोविन्द कुमार शर्मा, किशनगढ़, राज. २२. श्री सन्दीप आर्य, अजमेर २३. श्रीमती शिल्पा सैनी, गुड़गाँव, हरियाणा २४. श्री सुभाषचन्द नवाल, अजमेर २५. श्रीमती रमा नवाल, अजमेर २६. श्री सुभाष रमा नवाल, अजमेर २७. श्रीमती आशा नवाल, थाने, महा. २८. श्री सांकेत महेश्वरी, थाने, महा. २९. श्रीमती आशा सांकेत महेश्वरी, थाने, महा. ३०. श्री मथुराप्रसाद नवाल, अजमेर ३१. श्री सुशील नवाल, सिंगापुर ३२. श्रीमती श्रुति नवाल, सिंगापुर ३३. सुश्री यश्वी नवाल, सिंगापुर ३४. श्री सुशील श्रुति नवाल, सिंगापुर ३५. श्री शैलेष नवाल, अहमदनगर, महा. ३६. श्रीमती रितिका नवाल, मुम्बई, महा. ३७. श्री शैलेष रितिका नवाल, मुम्बई, महा. ३८. श्रीमती कमला देवी, अजमेर ३९. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर ४०. श्री पहेलसिंह, सहारनपुर, उ.प्र. ४१. श्री एस.एस. गोयल, लुधियाना ४२. श्री अमरचन्द माहेश्वरी, अजमेर ४३. श्री दिव्य कपूर, नई दिल्ली ४४. कर्नल श्री अनिल सिंह, नई दिल्ली ४५. श्री अजित सिंह, नजफगढ़, दिल्ली ४६. श्री देव मुनि, अजमेर ४७. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों को नि:शुल्क दिया जाता है। आप सभी गौ–भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता
(१६ से ३१ मार्च २०१४ तक)

१. श्री कल्प उपाध्याय, अजमेर २. श्री सत्यदेव आर्य, गुडगाँव, हरियाणा ३. श्री सुनील कुमार अरोड़ा, जयपुर ४. श्री देबर काण्डा दत्तात्रेय, जि. वरंगल, आं.प्र. ५. श्री सुनील कुमार रस्तोगी, मुरादाबाद, उ.प्र. ६. श्री शैलेन्द्र कुमार, मेरठ, उ.प्र. ७. श्री जोगिन्दर सिंह, पानीपत, हरियाणा ८. श्रीमती सुधा मेहरा, अजमेर ९. श्री महेन्द्र कुमार सिंहल, हरियाणा १०. श्री दयानन्द वर्मा, गुलाबपुरा, राज. ११. कुमारी अनन्या महेश्वरी, अजमेर १२. श्रीमती प्रेमलता शर्मा, अजमेर १३. श्री अभयदेव शर्मा, बून्दी, राज. १४. श्री परीक्षित, पानीपत, हरियाणा १५. श्रीमती निर्मला मेहरा, अजमेर १६. श्री कमलेश खण्डेलवाल, अजमेर १७. श्री यशपाल सलुजा, नई दिल्ली १८. श्री सुखवीर सिंह, अजमेर १९. श्री नरेश कुमार, नसीराबाद, राज. २०. राजपूताना म्युजिक हाऊस, अजमेर २१. श्री सुनीत कुमार, मुरादाबाद २२. श्रीमती सीता देवी वर्मा, अजमेर २३. श्रीमती सुशीला देवी शर्मा, अजमेर २४. श्रीमती मीना उपाध्याय, गुड़गाँव, हरियाणा २५. श्री श्रुति सैन, गुड़गाँव, हरियाणा २६. श्री नरेन्द्र गुप्ता, दिल्ली २७. श्री कृष्णकुमार नारनौल, हरियाणा २८. श्रीमती कमला देवी, अजमेर २९. श्री एस.एस. गोयल, लुधियाना, पंजाब ३०. श्रीमती उर्मिला उपाध्याय, अजमेर। **–परोपकारिणी सभा, अजमेर।**

सरदार पटेल ने चीन को १८ वर्ष पूर्व पहचान लिया था

यह शीर्षक पुस्तक **सरदार पटेल ने चीन को १८ वर्ष पूर्व पहचान लिया था** में लेखक ने इस दृष्टि से दिया है कि सरदार पटेल का पत्र नवम्बर १९५० का है जबकि यह पुस्तक १९६९ में छपी अर्थात् लगभग १८ वर्ष बाद। अतः इसमें कुछ विसंगति नहीं है। पत्र मूलरूप में यथावत् है। **- सम्पादक**

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

मेरे अहमदाबाद से वापस आने के तुरन्त बाद मन्त्री परिषद् (कैबिनेट) की बैठक हुई जिसमें उपस्थित होने के लिए मुझे केवल १५ मिनट पूर्व ही सूचना मिली थी और मुझे खेद है कि मैं तत्सम्बन्धी सभी कागजात पढ़ भी नहीं पाया था। तिब्बत के सम्बन्ध में मैं तभी से चिन्तित हूँ और मैंने यह सोचा है कि मेरे मस्तिष्क में जो विचार उमड़-घुमड़ रहे हैं, वे आपके साथ साझा करूँ।

हमारे विदेश मन्त्रालय और पेकिंग में हमारे राजदूत के मध्य तथा राजदूत के माध्यम से चीन सरकार के साथ जो पत्र व्यवहार हुआ है वह मैंने ध्यानपूर्वक पढ़ा है। इस पत्राचार का अध्ययन मैंने अपने राजदूत तथा चीन सरकार के प्रति यथासम्भव अनुकूल दृष्टि रखते हुए किया है। परन्तु मुझे खेदपूर्वक यह कहना पड़ रहा है कि दोनों ही हमारी दृष्टि में सही नहीं ठहरते।

अपने शान्तिपूर्ण इरादों की स्वीकारोक्ति के द्वारा चीन सरकार ने हमें झाँसा देने की कोशिश की है। मेरा स्वयं का यह विचार है कि एक संगीन समय में हमारे राजदूत के मन-मस्तिष्क में यह झूठा आत्मविश्वास का भाव भरने में चीन सरकार कामयाब हो गयी कि तिब्बत की समस्या को शान्तिपूर्ण ढंग से हल करने की उसकी इच्छा है।

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि उपर्युक्त पत्र-व्यवहार की अवधि में चीनियों ने तिब्बत में कत्लेआम पर अपने आप को केन्द्रित रखा होगा। चीनियों की इस विषय में, अन्तिम कार्रवाई मेरे निश्चित विचार में, धोखाधड़ी एवं बेवफाई ही है।

इस प्रकरण में दुःखद बात यह है कि तिब्बतियों ने हम पर विश्वास किया, उन्होंने हमसे मार्गदर्शन चाहा और हम उन्हें चीन के कूटनीतिक फन्दे एवं दुर्भावनापूर्ण कार्रवाई से बाहर नहीं निकाल पाये। हाल में घटे घटनाक्रम से ऐसा लगता है कि हम दलाईलामा का बचाव नहीं कर पायेंगे।

भारत का संशय - चीनियों की नीति एवं कृत्यों के सम्बन्ध में कुछ औचित्य अथवा स्पष्टीकरण देने में हमारा राजदूत असमर्थ है। जैसे कि विदेश मन्त्रालय ने अपने एक तार में टिप्पणी की है कि हमारे राजदूत ने हमारी ओर से चीन सरकार को जो दो प्रतिवेदन दिये उनमें दृढ़ता की कमी रही तथा अनावश्यक क्षमा-भाव से पूर्ण थे। यह कल्पना से परे की बात है कि कोई समझदार व्यक्ति यह विश्वास करेगा कि तिब्बत में एंग्लो-अमेरीकन साजिश चीन के लिए खतरा है। इसलिए यदि चीन इस उपपत्ति (थ्योरी) में विश्वास करता है तो उसका हम पर पूर्ण अविश्वास होगा और वह ये मानेगा कि हम उस एंग्लो-अमेरीकन कूटनीति या रणनीति में कठपुतली बने हुए हैं। यदि चीनियों की वास्तव में, आपके उनके साथ सीधे सम्बन्ध और सम्पर्क के बावजूद, यह धारणा है तो हम भले ही स्वयं को उनका मित्र मानें परन्तु चीनी हमें मित्र नहीं मानते। कम्युनिस्टों की इस मानसिकता ''जो उनके साथ नहीं है, वह उनका विरोधी है'' का हमें ध्यान रखना है, यह बहुत महत्वपूर्ण संकेतक है।

एकल समर्थक - पिछले कई महीनों के दौरान, रूसी कैम्प के बाहर चीन को यू.एन.ओ. में प्रवेश कराने के मामले में हम एक मात्र समर्थक थे और फारमूसा के प्रश्न पर अमेरीकियों से आश्वासन प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहे। चीनियों की भावनाओं को शान्त करने के लिए, उनकी आशंकाओं के निराकरण के लिए तथा उनके वैध दावों की रक्षा के लिए हम अमेरीका और ब्रिटेन के साथ चर्चा एवं पत्र-व्यवहार में तथा यू.एन.ओ. में वह सब कुछ करते रहे जो सम्भव था। इस सबके बावजूद चीन हमारी तटस्थता और निःस्पृहता से आश्वस्त नहीं है। चीन हमें संदेह की दृष्टि से देखता है और उसकी मानसिकता जैसा कि स्पष्टतया दिखाई पड़ता है संशयात्मक एवं शत्रुतापूर्ण है।

मुझे सन्देह है कि अपने नेक इरादों, मित्रभाव एवं सद्भावना के सिलसिले में चीन को आश्वस्त करने के लिए हमने जो कुछ किया है, हम उससे अधिक और कुछ कर सकते हैं। पेकिंग में हमारा राजदूत है जो हमारे मित्रतापूर्ण दृष्टिकोण को प्रस्तुत करने हेतु सर्वथा योग्य है। वह भी चीन का मन परिवर्तन करने में असफल हो गया लगता है। चीन से हमारे पास आया हुआ पिछला तार पूरी तरह से अशिष्टता का कृत्य है। चीनी फौजों के तिब्बत में घुसने पर

हमारे विरोध को सिरे से खारिज करते हुए उन्होंने यह भद्दा आक्षेप भी हम पर लगाया है कि हमारा दृष्टिकोण विदेशी प्रभावों से प्रभावित है। ऐसा लगता है कि उस भाषा में कोई मित्र नहीं एक प्रच्छन्न शत्रु बोल रहा है।

इस पृष्ठभूमि में हमें उस परिस्थिति पर विचार करना है जो तिब्बत का अस्तित्व समाप्त होने के कारण हमारे सम्मुख उपस्थित है और चीन अपना विस्तार करते हुए हमारी चौखट पर आ खड़ा हुआ है। पूरे इतिहास के दौरान हमने कभी भी अपने देश की उत्तर-पूर्वी सीमा के विषय में चिन्ता नहीं की है। उत्तर की ओर से किसी भी चुनौती के विरुद्ध हिमालय पर्वत एक अजेय रुकावट माना जाता रहा है। हमारे पास मित्रवत् तिब्बत था, जिससे हमें कोई कष्ट नहीं था। चीनी अपने आप में एक मत नहीं थे। उनकी अपनी घरेलू समस्याएँ थीं। हमारी सीमाओं के सम्बन्ध में उनसे हमें कुछ परेशानी नहीं थी।

अनिश्चित अवस्था - सन् १९१४ में हमने तिब्बत के साथ एक समझौता किया जिसका चीन ने अनुमोदन नहीं किया था। ऐसा लगता है कि हमने तिब्बत की स्वायत्तता को स्वतन्त्र सन्धि-सम्बन्ध स्थापित करने के लिए पर्याप्त मान लिया। अनुमानतः हमें उस समय चीन से उस पर प्रति हस्ताक्षर करा लेने चाहिए थे। चीन की अधिराज्य (Suzerainty) की परिभाषा कुछ अलग ही प्रतीत होती है। इसलिए हम यह सहज ही अनुमान लगा सकते हैं कि पूर्व में हमने तिब्बत के साथ जो समझौते किये हैं उनकी शर्तों/प्रावधानों को चीन अस्वीकार कर देगा। इसी कारण तिब्बत के साथ समझौतों के अन्तर्गत पिछली लगभग आधी शताब्दी से हम सीमाओं एवं व्यापार के मामले में जो कार्य व्यवहार करते रहे हैं, वह सब अनिश्चित स्थिति में पहुँच गए।

अब चीन में स्वयं में कोई वैमत्य नहीं है। अब यह संगठित एवं सुदृढ़ है। हिमालय के साथ-साथ पूरे उत्तर एवं उत्तर पूर्व में सीमा पर हमारी ओर ऐसी आबादी है जो मानव जाति विज्ञान सम्बन्धी एवं सांस्कृतिक दृष्टि से तिब्बतियों एवं मंगोलों से अलग नहीं है।

सीमा की अपरिभाषित स्थिति तथा सीमा पर हमारी ओर की आबादी का तिब्बतियों एवं चीनियों के प्रति निकटता वाला होना चीन के हमारे मध्य सम्भावित विरोध का महत्वपूर्ण कारक होगा। हाल की घटनाएँ तथा कटुतापूर्ण इतिहास तो यही दर्शाता है कि साम्यवाद साम्राज्यवाद से रक्षा नहीं करता है तथा कम्युनिस्ट भी साम्राज्यवादियों के समान ही उतने ही अच्छे अथवा बुरे हैं। इस सम्बन्ध में चीनियों की महत्वाकाँक्षाएँ हिमालय (पर्वत) के हमारी ओर के ढलान (क्षेत्र) तक ही सीमित नहीं है बल्कि आसाम के महत्वपूर्ण भाग भी उसमें शामिल हैं। बर्मा में भी उनकी महत्वाकांक्षाएँ निहित हैं। बर्मा की एक अतिरिक्त कठिनाई यह है कि उसके पास मैकमोहन लाइन भी नहीं है, जिसके सहारे किसी समझौते की रुपरेखा बन सके।

वैचारिक परदा - चीनी पुनः संयोजनवाद और साम्यवादी साम्राज्यवाद पश्चिमी शक्तियों के विस्तारवाद एवं साम्राज्यवाद से अलग प्रकार का है। इनमें प्रथम (चीनी) एक प्रकार के वैचारिक चोगे (परदे) की आड़ का सहारा लिये रखते हैं जिसके कारण वे दस गुणा अधिक खतरनाक हो जाते हैं। उनके वैचारिक विस्तारवाद के छद्मवेश में जातीय, राष्ट्रीय और ऐतिहासिक दावे छिपे होते हैं। इसलिए उत्तर एवं उत्तर पूर्व की सीमा पर मौजूद खतरा साम्यवादी एवं साम्राज्यवादी दोनों प्रकार का है, जहाँ हमारी पश्चिमी और उत्तर पश्चिमी खतरे उतने गम्भीर हैं, वहीं उत्तरी और उत्तर-पूर्वी सीमा पर नया खतरा आ उपस्थित हुआ है। इस प्रकार, शताब्दियों के पश्चात् प्रथम बार, भारतीय सुरक्षा व्यवस्था के लिए दोनों सीमाओं पर साथ-साथ प्रयत्न केन्द्रित करना होगा। अभी तक हमारे रक्षा-प्रबन्ध इस बात को ध्यान में रखते हुए हैं कि हम पाकिस्तान से बेहतर हैं।

अपने सुरक्षा आकलन में अब हमें यह ध्यान रखना है कि साम्यवादी चीन हमारे उत्तर और उत्तरपूर्व में है- वह कम्युनिस्ट चीन जिसकी निश्चित महत्वाकांक्षाएँ एवं उद्देश्य हैं और जो किसी भी प्रकार से हमारे प्रति मित्रतापूर्ण नहीं है।

इस सम्भावित खतरे की चपेट में आई सीमा के सिलसिले में राजनीतिक परिदृश्य पर मेरे विचार यह हैं। हमारे उत्तरी और उत्तर-पूर्वी मार्ग नेपाल, भूटान, सिक्किम, दार्जिलिंग और आसाम के जनजाति क्षेत्र के लिए हैं। संचार-साधनों की दृष्टि से ये बहुत दुर्बल बिन्दु हैं। निरन्तर बने रहने वाले सुरक्षा मार्ग मौजूद नहीं हैं। घुसपैठ की लगभग अपार सम्भावनाएँ हैं। बहुत ही कम संख्या में दर्रों पर पुलिस सुरक्षा है। वहाँ पर भी चौकियों पर पर्याप्त सैनिक नहीं है।

विरल (नाममात्र की) वफादारी - इन क्षेत्रों के लोगों के साथ हमारा सम्पर्क किसी भी प्रकार घनिष्ट और निकटता का नहीं है। इन भागों में रह रहे लोगों की भारत

के प्रति कोई दृढ़ निष्ठा नहीं है। दार्जिलिंग और कलिमपोंग के क्षेत्र भी मंगोलियाई वैचारिक अपनेपन से अछूते नहीं है। पिछले तीन वर्षों की अवधि में हम नागा लोगों एवं असम के अन्य जन-जाति के लोगों के साथ कुछ विशेष सम्पर्क नहीं कर पाये हैं। योरूपीय (ईसाई) मिशनरी एवं अन्य पर्यटक अवश्य उनसे सम्पर्क करते रहे हैं। परन्तु उनका प्रभाव भारत या भारतीयों के प्रति कोई मित्रता का नहीं है। सिक्किम में भी कुछ समय पूर्व राजनीतिक हलचल थी। यह बहुत सम्भव है कि वहाँ पर भी असन्तोष बढ़ रहा हो। भूटान अपेक्षाकृत शान्त है, परन्तु तिब्बतियों के साथ उनके सहज सम्बन्ध हम लोगों के सम्मुख बाधा ही बनेंगे। नेपाल में एक अल्पतन्त्रीय कुलीन राजशाही है जो सैन्यबल के सहारे टिकी है। वहाँ की आबादी के विघ्नसन्तोषी तत्वों के विरुद्ध उसका संघर्ष रहता है तथा आधुनिक युग के बुद्धिजीवी वर्ग से भी उसका तालमेल नहीं है।

दुरुह कार्य - इन परिस्थितियों में नए खतरों के प्रति लोगों को जागरुक करना तथा सुरक्षात्मक रुप से उन्हें मजबूत बनाना वास्तव में एक कठिन कार्य है और इस विकट कठिनाई से बुद्धिमत्तापूर्ण दृढ़ता, शक्ति एवं स्पष्ट नीति के द्वारा ही उबरा जा सकता है। मेरा यह विश्वास है कि चीनी तथा उनके प्रेरणा-स्त्रोत सोवियत रुस हमारी इस कमजोर स्थिति वाले अवसर का शोषण करने का मौका हाथ से नहीं जाने देंगे-विशेष रुप से अपने वैचारिक साम्य एवं अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए वे ऐसा करेंगे।

इसलिए मेरे विवेक में, यह परिस्थिति ऐसी है कि हम उदासीन होने अथवा ढुलमुल रवैया अपनाने का जोखिम नहीं ले सकते। इस विषय में हमारा यह सुदृढ़ निश्चय होना चाहिए कि हमें क्या लक्ष्य प्राप्त करना है और कौन से तरीके अपनाकर वह प्राप्त करना है। अपना लक्ष्य सुनिश्चित करने में और उन्हें प्राप्त करने के लिए नीति निर्धारित करके आगे बढ़ने में किसी भी प्रकार की लड़खड़ाहट या निर्णय लेने में दुर्बलता (न्यूनता) हमें निश्चित रुप से कमजोर करेगी और जो विकराल चुनौती स्पष्टतया सम्मुख है, वह बढ़ेगी ही।

इन बाह्य खतरों के साथ-साथ हमें गम्भीर आन्तरिक समस्याओं का भी सामना करना है। इन मामलों से सम्बन्धित इंटैलीजैंस ब्यूरो की रिपोर्ट विदेश मन्त्रालय को भेजने के लिए मैंने आयंगर को कहा है। अभी तक भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (सी पी आई) विदेशों में कम्युनिस्टों से सम्पर्क करने में या उनसे हथियार, साहित्य आदि प्राप्त करने में कुछ कठिनाई का सामना करते थे। उन्हें कठिन बर्मी या पाकिस्तान सीमाओं अथवा पूर्वी, लम्बी समुद्री सीमा तक ही सन्तोष करना पड़ता था।

सहज पहुँच - अब उनका चीनी साम्यवादियों के साथ तथा उनके माध्यम से विदेशी साम्यवादियों के साथ अपेक्षाकृत आसानी से सम्पर्क हो सकेगा। जासूसों, देशद्रोहियों और साम्यवादियों के लिए अब घुसपैठ सरल हो जायेगी। अभी तक तो हमें तेलंगाना और वारांगल के इक्के-दुक्के निर्जन साम्यवादी क्षेत्रों में उनसे निपटना पड़ता था, परन्तु अब हमें सुरक्षा के प्रति उन साम्यवादी खतरों से जूझना होगा जो हमारी उत्तरी और उत्तरी पूर्वी सीमा पर उपस्थित हैं और चीन से साम्यवादी साहित्य, अस्त्र-शस्त्र और गोला बारुद की जो आपूर्ति सरल हो जायेगी, उससे भी निपटना होगा।

सम्पूर्ण परिदृश्य इस प्रकार बहुत सी समस्याएँ उपस्थित करता है जिनके सिलसिले में हमें शीघ्र निर्णय लेना होगा, जिससे कि हम, जैसा कि पहले ही कहा है, अपनी नीति का लक्ष्य निर्धारित करें और वे तौर-तरीके निश्चित करें, जिससे हमारे कार्यों में सुरक्षा सम्बन्धी व्यूह रचना और उच्च स्तरीय तैयारी शामिल हो। साथ ही आन्तरिक सुरक्षा सम्बन्धी समस्याओं का समाधान करने में हमें क्षणभर का भी विलम्ब नहीं करना है। जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है हमें अपनी सीमा के दुर्बल स्थानों पर प्रशासनिक एवं राजनीतिक समस्याओं का भी समाधान करना है।

अविलम्ब समस्याएँ - वास्तव में इन सभी समस्याओं का विस्तार से उल्लेख कर पाना तो मेरे लिए सम्भव नहीं है। तथापि मैं कुछ समस्याओं का यहाँ उल्लेख कर रहा हूँ जिनका मेरे विचार में तुरन्त समाधान होना चाहिए और उसी सिलसिले में हमें अपनी प्रशासनिक और सैन्य नीतियाँ बनानी हैं और उनके क्रियान्वयन के तरीके लागू करने हैं।

(१) भारत की सीमाओं की एवं आन्तरिक सुरक्षा के प्रति चीनी चुनौती का सैन्य और खुफिया एजेसियों द्वारा मूल्याँकन।

(२) हमारी सैन्य अवस्थिति की जाँच और सेना का पुन: यथापेक्षित अवस्थापन विशेष रूप से उन रास्तों एवं क्षेत्रों की सुरक्षा की दृष्टि से जहाँ विवाद सम्भावित है।

(३) हमारी सैन्य शक्ति का मूल्याँकन तथा नये खतरों को दृष्टि में रखते हुए सेना के लिए सोची गयी

छंटनी की योजना पर पुनर्विचार।

(४) हमारी सैन्य आवश्यकताओं पर दीर्घ-कालिक चिन्तन। मेरा मत यह है कि जब तक हम गोला बारुद, अस्त्र-शस्त्र और तोपखाने की आपूर्ति सुनिश्चित न कर लें, तो हमारी सैन्य स्थिति निरन्तर कमजोर ही रहेगी और हम पश्चिम और उत्तर-पश्चिम तथा उत्तर और उत्तर-पूर्व दोनों चुनौतियों का सामना करने में समर्थ नहीं होंगे।

(५) चीन के यू.एन.ओ. में प्रवेश का प्रश्न। चीन ने जो बदसलूकी हमारे साथ की है तथा तिब्बत के साथ व्यवहार में जो तरीका उसने अपनाया है, उसे देखते हुए मुझे सन्देह है कि हम उसके दावे की आगे वकालत कर सकेंगे। कोरिया के युद्ध में चीन की सक्रिय सहभागिता को देखते हुए, चीन को वस्तुत: गैरकानूनी घोषित करने की यू.एन.ओ. में चुनौतीपूर्ण स्थिति होगी। इस प्रश्न पर हमें अपना दृष्टिकोण सुसंगत कर लेना चाहिए।

(६) अपनी उत्तरी और उत्तर-पूर्वी सीमाओं की सुरक्षा मजबूत करने के लिए हमें क्या राजनीतिक और प्रशासनिक कदम उठाने हैं। इसमें नेपाल, भूटान, सिक्किम, दार्जिलिंग और आसाम के जनजाति क्षेत्र सम्मिलित होंगे।

(७) सीमा क्षेत्र में आन्तरिक सुरक्षा के लिए तथा सीमा से सटे हुए (पार्श्वभाग वाले) राज्यों यथा उत्तरप्रदेश, बिहार, बंगाल और असम की आन्तरिक सुरक्षा के लिए उठाये जाने वाले कदम।

(८) इन क्षेत्रों में तथा सीमा पर स्थित चौकियों तक संचार-साधन, सड़क, रेल, वायु-परिवहन एवं बेतार के तार की सुविधाओं में सुधार।

(९) सीमा चौकियों पर खुफिया एवं पुलिस गश्त।

(१०) ल्हासा में हमारे दूतावास, ग्यांगटसे और यातुंग में व्यापार चौकियों तथा व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा के लिए तिब्बत में अवस्थित हमारे सुरक्षाबल के भविष्य पर विचार।

(११) मैकमोहन लाइन की नीति पर विचार।

बर्मा के साथ सम्बन्ध - ये कुछ प्रश्न मेरे मस्तिष्क में आ रहे थे। यह सम्भव है कि इन बिन्दुओं परविचार करते समय हमें चीन, रुस, अमेरीका, ब्रिटेन, बर्मा के साथ अपने सम्बन्धों के विस्तृत परिप्रेक्ष्य में कुछ प्रश्नों का सामना करना पड़े। भले ही यह बात साधारण हो, परन्तु इनमें मूलरूप से कुछ महत्वपूर्ण बातें भी हैं जैसे कि हमें बर्मा के साथ निकट सम्बन्ध बनाने चाहिए, जिससे बर्मा चीन के साथ अपने कार्य-व्यवहारों में बेहतर स्थिति में हो जाये। मैं इस सम्भावना से भी इंकार नहीं करता कि हो सकता है चीन हमारे ऊपर दबाब बनाने से पूर्व बर्मा पर दबाब बनाना आरम्भ कर दे।

बर्मा के साथ सीमा पूर्णत: अपरिभाषित है और चीन के क्षेत्रीय दावे ठोस हैं। अपनी वर्तमान स्थिति में बर्मा की ओर से चीन के लिए कम समस्या है और इसीलिए चीन का ध्यान उसकी ओर पहले जा सकता है।

मेरा सुझाव है कि इन समस्याओं पर विचार करने के लिए हम शीघ्र मिलें, ऐसे कदम उठाने का निर्णय लें जो तुरन्त आवश्यक हैं और उन समस्याओं की भी त्वरित जाँच करें जिससे शीघ्र कदम उठाकर उनका निपटान किया जा सके। **शेष भाग अगले अंक में.......**

प्रस्तुतकर्त्ता - सत्येन्द्र सिंह आर्य

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि परोपकारिणी सभा के अन्तर्गत संचालित आर्य गुरुकुल सलखिया, जिला रायगढ़, छत्तीसगढ़ के अधिष्ठाता स्वामी रामानन्द को उनकी अनधिकृत, अवैध, अनुचित व अनुशासनहीनता पूर्ण प्रवृत्तियों व गतिविधियों के कारण परोपकारिणी सभा ने गुरुकुल सलखिया के समस्त पद एवं दायित्व से मुक्त कर दिया है।

सभी आर्यजन व दानदाताओं से निवेदन है कि स्वामी रामानन्द को परोपकारिणी सभा से सम्बन्धित आर्य गुरुकुल सलखिया के लिए कोई धन राशि अथवा अन्य सामान दान के रूप में प्रदान न करें।

- मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

मनुष्यों को चाहिये कि दिन-रात उत्तम सज्जनों के संग से धर्म्मार्थ काम और मोक्ष की सिद्धि करते रहें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.१६

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

न्याय-दर्शन का अध्यापन

महर्षि गौतम प्रणीत **न्याय-दर्शन** और उस पर लिखा **वात्स्यायन-भाष्य** प्रमाण व अर्थतत्त्व को समझने की प्रक्रियाओं का सर्वाङ्गपूर्ण विवरण प्रस्तुत करता है। सभी वैदिक-अवैदिक दर्शनों को अपने मान्य सिद्धान्त प्रस्तुत करते समय इस पद्धति का प्रयोग करना अपेक्षित होता है। न्याय-दर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य विषय 'प्रमाण' है। 'प्रमाण' को ठीक प्रकार जानने से ही तत्त्वनिश्चय ठीक हो पाता है, तभी मुक्ति का मार्ग भी प्रशस्त हो पाता है। प्रमाण ज्ञान से चिंतन-विचार की प्रक्रिया ठीक हो पाती है, नहीं तो अनजाने में मिथ्या सिद्धान्त गले पड़ जाते हैं। न्याय-दर्शन के अध्ययन से किसी भी बात की परीक्षा-समीक्षा की सामर्थ्य बढ़ती है और उचित-अनुचित का निर्णय सरलता-शीघ्रता-शुद्धता से हो पाता है। इस प्रकार यह शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति में अत्यन्त सहायक होता है।

ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में स्वामी विष्वङ् द्वारा (वैशाख शुक्ल द्वितीया २०७१, १ मई २०१४) से इसका विधिवत् नियमित संपूर्ण अध्यापन कराया जायेगा। यह दर्शन १०-११ महीनों में मार्च-अप्रैल २०१५ तक पूर्ण होगा। इस बीच प्रत्येक अध्याय की लिखित परीक्षा भी ली जायेगी। कुल ५ परीक्षाएँ होंगी। इनमें ७५ प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वालों को '**न्यायाचार्य**', ६१ से ७५ प्रतिशत तक अङ्क वालों को '**न्याय-विशारद**' व ५१ से ६० प्रतिशत तक अङ्क वालों को '**न्याय-प्राज्ञ**' की उपाधि दी जायेगी। इस कक्षा में संस्कृत से परिचित साधक प्रकृति के ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी, संन्यासी पुरुष व महिलाएँ भाग ले सकते हैं। इसमें बुद्धिमान्, स्वस्थ, अपने कार्यों को स्वयं करने में समर्थ, सेवाभावी, अनुशासन में रह सकने वाले अधिकतम २० पूर्णकालिक व्यक्तियों का स्थान है।

इस काल में प्रातः व सायं उपदेश भी सुनने को मिलेगा। बीच-बीच में विभिन्न विद्वानों द्वारा अन्य विविध विषयों पर भी कक्षा एवं उपदेश होते रहेंगे। ब्रह्मचारियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास व भोजन व्यवस्था निःशुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार सहयोग कर सकते हैं। माताओं-बहनों के लिए निवास की पृथक् व्यवस्था रहेगी। **सम्पर्क**-९४१४००३७५६ (स्वामी विष्वङ्) **सायं ५.३० से ६.००**। **पता**-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर-३०५००१ (राज.), ईमेल-psabhaa@gmail.com

जिज्ञासा समाधान – ६१

– आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा १– आचार्य सोमदेव जी नमस्ते,

परोपकारी के वर्तमान दिसम्बर (द्वितीय) २०१३ अङ्क में अभिवादन से सम्बन्धित प्रश्न का उत्तम समाधान देने के लिये आपको बहुत धन्यवाद। मेरा एक गम्भीर प्रश्न है कि अभिवादन करते समय कुछ लोग पैर छूते हैं– क्या इसका कोई वैदिक प्रमाण है? सत्यार्थप्रकाश और महर्षि दयानन्द के दूसरे बहुत से लेखों जैसे कि– 'व्यवहारभानु' में अभिवादन करते समय 'पैर छूने' का वर्णन नहीं है। मेरे विचार में 'पैर छूना' किसी भी वेद या सम्बन्धित आर्षग्रन्थ द्वारा स्वीकृत नहीं है। यह अमानवीय है और पैर छूने वाले व्यक्ति को हीन बनाना है।

कृपया मुझे अपना विचार दें और उचित वैदिक उद्धरण यदि ऐसा उल्लेखित है तो बतायें। कृपया अपना उत्तर (समाधान) ई–मेल के द्वारा लिखें या 'जिज्ञासा–समाधान' में दें। बहुत धन्यवाद–

पहले इसे मैंने २८ दिसम्बर २०१३ को ई–मेल से भेजा था। कृपया आगे के प्रश्न का उत्तर देकर वैदिक ज्ञान प्रदान करें और सामाजिक–अज्ञानता को हटायें।

– दीन बी. चन्दौरा

समाधान १– परस्पर व्यवहार करते समय हम शिष्टाचार ..... एक–दूसरे को अभिवादन करते हैं। वह अभिवादन किसके साथ किस प्रकार करें कि जिससे हमारी यथायोग्य व्यवहार कुशलता पूर्वक सिद्ध होवे। इसके लिए हमारे ऋषियों ने संकेत किये हैं। हम अपने बड़ों, छोटों, समान वालों से उनकी योग्यतानुसार सम्मानपूर्वक यथायोग्य अभिवादन करें। हम कैसे करते हैं, यह हमारी व्यवहार कुशलता पर निर्भर करता है। छोटों और समान वालों को छोड़कर अपने बड़ों अर्थात् आचार्य, विद्वान्, माता–पिता, योग्य संन्यासी आदि को अभिवादन कैसे करें, तो हमारा विचार है कि पैर छूकर करना अच्छा है।

प्राचीन इतिहास ग्रन्थों, धर्म शास्त्रों, सूत्र ग्रन्थों में बड़ों के पैर छूना लिखा हुआ है। मनु स्मृति, सूत्र ग्रन्थ में विधान है कि शिष्य अपने आचार्य को चरण स्पर्श–पूर्वक अभिवादन करे। चरण स्पर्श कैसे करें, यह भी लिखा हुआ है। प्रमाणार्थ हम यहाँ उनको दे रहे हैं–

व्यत्यस्तपाणिना कार्यमुपसंग्रहणं गुरोः।
सव्येन सव्यः स्प्रष्टव्यो दक्षिणेन च दक्षिणः।।

मनु. २.४७

(गुरोः उपसंग्रहणम्) गुरु के चरणों का स्पर्श (व्यत्यस्तपाणिना कार्यम्) हाथों को अदल–बदल करके करना चाहिए अर्थात् प्रणामकर्त्ता का बायां हाथ नीचे कर गुरु के बायें पैर का स्पर्श करें और उसके ऊपर से दायां हाथ दायें चरण को स्पर्श करे। (सव्येन सव्यः) बायें हाथ से बायां चरण (च) और (दक्षिणेन दक्षिणः) दायें हाथ से दायां पैर (स्प्रष्टव्यः) स्पर्श करना चाहिए। इसी प्रकार का विधान सूत्र ग्रन्थ में किया है– दक्षिणेन पाणिना दक्षिणं पादमधस्तादभ्यधिमृश्य सकुष्टिकमुपसंगृह्यात्।।

आप.सू.दि.प. २१।

और भी

स पितुश्चरणौ पूर्वमभिवाद्य विनीतवत्।
ततो ववन्दे चरणौ कैकेय्याः सुसमाहितः।।

रा.अ.का. १८.२

श्री राम ने पहले पिता के चरणों में विनयपूर्वक अभिवादन किया, फिर अच्छे प्रकार समाहित राम ने माता कैकयी के चरण छूए। यह प्रसंग कैकयी द्वारा राम को कोप भवन में बुलाये जाने का है। ये उपरोक्त सभी आर्ष ग्रन्थों के प्रमाण हैं, इसलिए यह कहना उचित नहीं कि पैर छूना वेद या सम्बन्धित आर्षग्रन्थ द्वारा स्वीकृत नहीं।

अपने बड़ों से कैसे हम शिष्टाचार पूर्वक व्यवहार करें वह सब मनुस्मृति धर्म शास्त्र में दिया हुआ है। अपने बड़ों को अभिवादन दूर से न करें, समीप आकर सामने से करें, बैठे–बैठे अथवा लेटे हुए न करें, खड़े होकर, झुक कर अभिवादन करें, अधिक ऊँची आवाज में बोलते हुए न करें आदि विधान शिष्टाचार के हैं। कोई व्यक्ति परिस्थिति न होने पर भी दूर से ही अभिवादन करता है, कोई समीप आकर, कोई समीप आकर भी बिना हाथ जोड़े केवल बोलकर करता है, कोई हाथ भी जोड़ लेता है, कोई हाथ जोड़ गर्दन झुकाकर अभिवादन करता है, कोई और अधिक नतमस्तक होकर, कोई पैर छूने के लिए एक हाथ घुटनों तक ले जाकर, कोई पैरों तक हाथ ले जाकर और कोई दोनों हाथों से श्रद्धा पूर्वक पैर छूकर अभिवादन करता है। ये सब उपाय लोगों के अपने–अपने हैं, इनमें से जो श्रेष्ठ व

आदर्श हो उसको हम अपना लेवें।

अपने बड़ों के पैर छूना कर्म अमानवीय नहीं है, अपितु यह तो मानवोचित कर्म ही है। कोई बलात् पैर छूवाता हो अथवा छूने के लिए कहता हो तब तो अमानवीय या हीन बनाना कह सकते थे। हाँ, बच्चों के लिए तो सिखाने की दृष्टि से बलात् भी चल सकता है। देने वाला और वह भी सम्मान देने वाला निश्चित रूप से हीन नहीं है, उसमें मानवीयता है। जो जितना अधिक यथायोग्य सम्मान अपने बड़ों को देता है, वह उतना ही अधिक सभ्य व शिष्ट कहलाता है। सम्मान करने वाला (पैर छूने वाला) कभी हीन नहीं बनता, अपितु ऐसा करने से उसका अहंकार नष्ट होकर उसमें सरलता आती है, जिससे वह हीन न बनकर और अधिक उच्च बनता है। हीन तो तब बनाना होता, जब उसके द्वारा सम्मान करने, पैर छूने पर, सामने वाला उसकी उपेक्षा कर रहा हो, उससे मुँह फेर रहा हो, बात न करना चाहता हो, यदि ऐसा नहीं है तो उसको हीन बनाना भी नहीं है। हीन तो कहते हैं छोड़े हुए को, परित्यक्त को, नीचे-अधम को, अंगहीन को, जो अपने यज्ञानुष्ठान में अवहेलना करता है उसको, सदोष साक्षी देने वाले को, मूक व्यक्ति को, नीचे व्यक्तियों से मेलजोल और उनकी सेवा करने वाले को। ये सब हीन कहलाते हैं। पैर छूकर अभिवादन करने वाला इन किसी में नहीं आता, अत: वह हीन नहीं है। किसी सूक्तिकार की दृष्टि में हीन पाँच प्रकार के हैं-

अन्यवादी क्रियाद्वेषी नोपस्थायी निरुत्तरः।
आहूतप्रपलायी च हीनः पंचविधः स्मृतः।।

समान वार्ता का तात्पर्य यही है कि हम अपने बड़ों का सत्कार, पैर छूना आदि करके कर सकते हैं, करना चाहिए फिर भी यदि किसी को यह कार्य अमानवीय व दबाना, हीन बनाना लगे व दिखे तो वह कार्य को न करे।

जिज्ञासा २- पूज्य आचार्य जी सादर नमस्ते। परोपकारी मार्च (द्वितीय) अंक में जिज्ञासा-समाधान शीर्षक न पाकर दु:ख हुआ। आपके कार्यभार का अनुमान लगाकर ही मैं अपनी जिज्ञासा नहीं भेजता था। शायद आपके पास पहुँची सभी जिज्ञासाऐं निपटा दी गयी हैं, अब मुझे अपनी गलती का अनुभव हो रहा है। परोपकारी एक मात्र पत्रिका है, जो पाठकों की जिज्ञासाओं का वैदिक-समाधान देने का साहस दिखा रही है, अन्य विद्वान् अपनी मुट्ठी बन्द रखने में ही भलाई समझ चुप्पी साधे हैं। आचार्य जी का समाधान न केवल आत्म-तृप्ति देता है, अपितु आर्ष-ग्रन्थों के स्वाध्याय की प्रेरणा भी देता है। मेरी जिज्ञासा निम्न है-

स्त्री वर्ग द्वारा पति से भिन्न पुरुष के पैर छूने की स्वीकार्यता है या नहीं? यदि है तो कहाँ और कैसे? जैसे- अभिवादन करने या आशीर्वाद लेने के लिए-

(क) क्या पुत्री को पिता या पितामह आदि पारिवारिक बड़ों के पैर छूने चाहिए?

(ख) क्या छात्रा को अपने पुरुष अध्यापक/आचार्य के पैर छूने चाहिए?

(ग) क्या बहु को पति-परिवार के बड़े पुरुषों के पैर छूने चाहिए?

(घ) क्या स्त्री-वर्ग को अपने आध्यात्मिक-गुरु (पुरुष) के चरण लेने चाहिए?

प्रश्न इसलिए उत्पन्न हुआ, क्योंकि गुरुकुल सोनीपत का आचार्य कहलाने वाले, पूज्यपाद सत्यपति जी का शिष्य बताने वाले गौतम नामी श्वेतवस्त्रधारी एक आकर्षक व्यक्तित्व ने क्षेत्र में लगातार अस्सी घरों में यज्ञ कराये, यज्ञोपरान्त तालियाँ बजाकर- ओं नम: शिवाय। ओं नमो नारायणाय। ओं नम: ठाकुराय..... कीर्तन कराया। मनोकामना पूर्ण, दु:ख-विनाश और रोग निवारण का आश्वासन आँख बन्द कर ध्यान कराते हुए दिया। अन्त में पंक्तिबद्ध स्त्री-पुरुषों से चरण-छूकर शिष्यों द्वारा पूज्य गुरुदेव से आशीर्वाद लेने की घोषणा प्रत्येक कार्यक्रम में होती रही, कुछ गुरुडम कह बाहर निकल जाते, कुछ गुरु भक्त व भक्तिनियाँ ऐसा ही करती रहीं। आपका कृपापात्र

- श्यामसिंह सहयोगी, उमाही कलाँ, सहारनपुर, उ.प्र.

समाधान २- स्त्री वर्ग द्वारा पति से भिन्न पुरुष, अपने निकट के पारिवारिक धार्मिक वयोवृद्ध जन के पैर छूने की स्वीकार्यता प्रतीत होती है। रामायण आदि इतिहास ग्रन्थों में इसका वर्णन आता है, हम यहाँ इसके लिए एक प्रमाण दे रहे हैं-

अथ रामश्च सीता च लक्ष्मणश्च कृताञ्जलिः।
उपसंगृह्य राजानं चक्रुर्दीनाः प्रदक्षिणम्।

रा.अ.का. ३३.१

यह श्लोक राम के वनवास के समय का है, इसमें कहा है- दु:खी राम, लक्ष्मण और सीता ने हाथ जोड़ चरण स्पर्श कर, दशरथ को प्रणाम किया तथा उनकी प्रदक्षिणा की। यहाँ सीता के द्वारा भी दशरथ के चरण स्पर्श की बात है जो कि उनके श्वसुर हैं। इसी प्रकार पितृपक्ष में धार्मिक जन को प्रणाम किया जा सकता है।

वैदिक दृष्टिकोण से तो छात्राओं को स्त्री आचार्या,

अध्यापिका ही पढ़ावें, का यह विधान है। कन्याओं को पुरुष आचार्य पढ़ावे, यह विधान ही नहीं है, फिर भी यदि ऐसा है तो छात्रा उस पुरुष आचार्य के पैर न छूकर दूर से आदरपूर्वक प्रणाम कर लेवे, यही उचित है। मनु स्मृति में जैसे ब्रह्मचारी को गुरुपत्नी के पैर छूने का निषेध है, ऐसे ही यहाँ भी समझें।

गुरु पत्नी तु युवतिर्नाभिवाद्येह पादयोः।
पूर्णविंशतिवर्षेण गुणदोषौ विजानता।।

मनु. २.१८७

युवक गुण दोष को समझाने वाला ब्रह्मचारी, युवति गुरु पत्नी के चरण स्पर्श कर अभिवादन न करे अर्थात् बिना चरण स्पर्श किये ही अभिवादन करे। इससे ब्रह्मचारिणी (छात्रा) का भी विधान समझें कि वह भी आचार्य को दूर से अभिवादन करे और इसी प्रकार आचार्या-पति को भी दूर से ही अभिवादन करें।

ऋषियों के जीवनाचरण को देखते हुए आदर्श पुरुष गुरु स्त्रियों से चरण लेने ही नहीं देगा, वह स्वयं ही ऐसा उपदेश करेगा कि कोई स्त्री उसके पैर न छुए। स्त्रियों को भी चाहिए कि वे भी उसके पैर न छूएं, इसी में दोनों की भलाई है। आजकल स्त्रियों द्वारा गुरुओं के पैर पड़ने का फैशन सा बन गया है, जो बहुधा अनर्थकारी ही सिद्ध हो रहा है। हमारे कुछ वैदिक विद्वान् इस बात का कठोरता से ध्यान रखते हैं कि कोई स्त्री उनके पैर न छूवे, कुछ इस विषय में अतिशिथिल रहते हैं, जो कि उचित नहीं।

महर्षि दयानन्द के जीवन में ऐसा कोई प्रसंग नहीं मिलता, जिसमें उन्होंने किसी स्त्री से पैर छुवाएँ हों। महर्षि के एक बार किसी स्त्री ने पैर छू लिए थे, वो भी तब जब महर्षि आँख बन्द कर ध्यान कर रहे थे। महर्षि को उस स्त्री का उनके पैर छूना इतना अखरा (बुरा लगा) कि उन्होंने तीन दिन तक निराहार मौन रहकर एकान्त में प्रायश्चित किया। महर्षि का तो हमारे सामने इतना ऊँचा आदर्श है। यदि कोई गुरू बनना ही चाहता है तो इस आदर्श को लेकर चले तभी कुछ कल्याण है, अन्यथा तो महापतन है ही।

अब रही बात ऐसे आचार्य की जो तालियाँ बजवाकर नमः शिवाय, नारायणाय, ठाकुराय... आदि बुलवाकर कीर्तन करवाने वाले, मनोकामनापूर्ण, दुःख विनाश और रोग निवारण का आश्वासन देते हैं तो ऐसे लोग ऋषियों द्वारा दी गई विद्या का दुरुपयोग कर अपना अधम स्वार्थ सिद्ध किया करते हैं। ऐसे लोग ऋषियों के आदर्श व सिद्धान्त को हटाकर अपने प्रयोजन की सिद्धि के लिए वेद से विरुद्ध कार्य करने पर उतर आते हैं। पहले ही संसार में अविद्या को फैलाने वाले निर्मल बाबा जैसों की भरमार है, उसमें ये लोग और वृद्धि करते हैं।

विशुद्ध भावना से वैदिक वाङ्मय पढ़ने वाला ऐसा कार्य कदापि करेगा ही नहीं। यदि कर रहा है तो उसकी मनोवृत्ति शुद्ध नहीं। कहने को तो वह यही कहेगा कि मेरे इस कार्य से अधिक लोग जुड़ेंगे, अधिक लोगों का भला होगा, अधिक प्रचार होगा, किन्तु यथार्थता में वह व्यक्ति अपनी तुच्छ ऐषणाओं की पूर्ति करने वाला होता है। विद्या पढ़कर भी व्यक्ति ने समाज में अविद्या को ही फैलाया, बोलना सीखकर उसने समाज में भ्रम ही फैलाया तो उसका पढ़ना व बोलना व्यर्थ है, उसका ऐसा कहना, बोलना तो धिक्कार के योग्य ही है। ऐसों से सावधान रहना ही उपाय है।

जिज्ञासा ३- आदरणीय महोदय, सादर नमस्ते, महारभारत में एक स्थान पर आया है कि मनुष्य जिस-जिस शरीर (स्थूल या सूक्ष्म) से जैसा कर्म करता है, वह उसी-उसी शरीर से फल प्राप्त करता है। मैं इस विषय में पूछना चाहता हूँ कि क्या सूक्ष्म शरीर से भी कर्म किया जा सकता है?

- अजयसिंह चौहान, आर्य निवास, आदर्श कॉलोनी, पलवल

समाधान ३- केवल सूक्ष्म शरीर से न तो कर्म किया जा सकता है और न ही फल भोगा जा सकता है अर्थात् बिना स्थूल शरीर के सूक्ष्म शरीर कर्म नहीं कर सकता और न ही स्थूल में रहते हुए सूक्ष्म शरीर से किये कर्मों का फल केवल सूक्ष्म शरीर के द्वारा भोगा जा सकता। जीवात्मा सूक्ष्म शरीर सहित स्थूल शरीर में रहते हुए मन, वाणी, शरीर से कर्म करता है। मुख्य रूप से ये ही उसके कर्म करने के साधन हैं। न्यायदर्शन, मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में उन्हीं तीनों के कर्मों का वर्णन है, पृथक् से सूक्ष्म शरीर के कर्मों का कथन नहीं किया गया है।

अधर्म से युक्त होकर जीवात्मा शरीर, वाणी, मन से १० शुभ कर्म और १० अशुभ कर्म करता है। शरीर से तीन अशुभ कर्म-

'शरीरेण प्रवर्त्तमानो हिंसास्तेयप्रतिषिद्धमैथुनान्याचरति'

हिंसा, चोरी और शास्त्रनिषिद्ध मैथुन अर्थात् परस्त्री गमन आदि।

वाणी से चार अशुभ कर्म-

'वाचाऽनृतपरुषसूचनाऽसम्बद्धानि'

असत्य बोलना, कठोर बोलना, निरायुक्त कठोर वचन बोलना, असंगत बोलना (व्यर्थ कुछ का कुछ बोलना)।

मन से तीन अशुभ कर्म-

'मनसापरद्रोहं परद्रव्याभीस्सां नास्तिक्यं चेति'

दूसरे से द्रोह रखना, अन्याय से दूसरे के द्रव्य की प्राप्ति की इच्छा और नास्तिकता अर्थात् ईश्वर, वेद, धर्म, पुनर्जन्म आदि को न मानना।

इसी प्रकार शरीर से तीन शुभ कर्म-

'शरीरेण दानं परित्राणं परिचरणं च'

योग्यों का दान देना, रक्षा करना और सेवा शुश्रूषा करना।

ये वाणी से चार शुभ कर्म-

'वाचा सत्यं हितं प्रियं स्वाध्यायं चेति'

सत्य बोलना, हितकारी बोलना, प्रिय बोलना और वेदादि का स्वाध्याय करना।

मन से तीन शुभ कर्म- **'मनसा दयामस्पृहां श्रद्धां चेति'**

दया करना, लोभ न करना और ईश्वर, शास्त्र व गुरु आदि के प्रति श्रद्धा रखना। ये सब शुभ-अशुभ कर्मों का वर्णन न्याय दर्शन १.१.२ के वात्स्यायन भाष्य में है। यहाँ पृथक् से सूक्ष्म शरीर से कर्म करने का कथन नहीं है।

इसी प्रकार का वर्णन मनुस्मृति में आता है-

परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिन्तनम्।
वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधं कर्म मानसम्।।
पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः।
असंबद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्।।
अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः।
परदारोपसेवा च शारीरं त्रिविधं स्मृतम्।।

मनु. १२.५-७

उपरोक्त भाव इन श्लोकों का भी है, यहाँ भी पृथक् से सूक्ष्म शरीर की चर्चा नहीं है। इसलिए आत्मा केवल सूक्ष्म शरीर से कर्म करता हो ऐसा कहीं सिद्ध नहीं है। हाँ मन और वाणी सूक्ष्म शरीर के अवयव अवश्य हैं, उसके अवयव होते हुए भी बिना स्थूल शरीर के ये कर्म नहीं कर सकते। फिर भी कोई इनको सूक्ष्म शरीर के रूप में भिन्नता की दृष्टि से देखना चाहे तो देख सकता है।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

ई-मेल द्वारा परोपकारी निःशुल्क

परोपकारी के पाठकों को प्रसन्नता होगी कि अब परोपकारी ई-मेल द्वारा भी भेजी जा रही है। परोपकारिणी सभा की वेब-साइट पर तो परोपकारी पहले से ही निःशुल्क उपलब्ध है। विश्व में कहीं भी कोई भी इसे वेब-साइट पर पढ़ सकता है। इसके साथ ही अब यह सुविधा भी उपलब्ध कराई गई है कि परोपकारी आपके पास ई-मेल द्वारा पहुँच जाये। इससे यह पत्रिका शीघ्र व अधिक सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकेगी। आप जहां भी रहें, कभी भी पढ़ना चाहें, यह आपके पास रहेगी। डाक की अव्यवस्था से छुटकारा मिल सकेगा। यह आपको नियमित मिलती रहेगी। इससे रासायनिक रंगों व कागज का उपयोग भी कम होगा, खर्च भी घटेगा। अतः पाठकों से अनुरोध है कि **कृपया अपना ई-मेल पता सभा को ई-मेल से भिजवा देवें।** आप जिन इष्ट-मित्रों, परिजनों व संस्थाओं को परोपकारी भिजवाना चाहते हैं, उनके ई-मेल पते भी भिजवा देवें, उन्हें भी यह निःशुल्क भेज दी जायेगी। ई-मेल-psabhaa@gmail.com

-व्यवस्थापक

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ निःशुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक खाता संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक खाता संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

संस्था - समाचार

१६ से ३१ मार्च २०१४

१. होलिकोत्सव- पर्व हमारे सामाजिक जीवन में एक विशेष महत्त्व रखते हैं। समाज को संगठित रखने के साथ-साथ जीवन में आयी न्यूनताओं को भी पूर्ण करते हैं। इस दृष्टि से 'होली' पर्व का अपना एक अलग ही स्थान है। इस पर्व को ऋषि उद्यान में बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। प्रात:काल नवशस्येष्टि यज्ञ के माध्यम से अपक्व अन्न की यज्ञ में आहुतियाँ दी गयीं। तत्पश्चात् कार्यक्रम का आरम्भ ब्र. सुरेश जी के ईश्वर-भक्ति भजन से हुआ। वैद्य रमेश मुनि जी ने होली के महत्त्व को व इसे मनाने की सही पद्धति को सरल शब्दों में श्रोताओं को बताया। मुमुक्ष मुनि जी ने बताया कि पहले होली का स्वरूप कैसा था और अब वह किस तरह से विकृत हो गया है। गंगा जब अपने उद्‍गम स्थल से निगलती है तो शुद्ध व पवित्र होती है, परन्तु जैसे-जैसे वह आगे बढ़ती है, वैसे-वैसे उसमें गंदगी मिलती जाती है। वैसे ही पर्वों का प्रारम्भ हमारे ऋषियों ने हमारे लाभ के लिये शुद्ध रूप में किया था, परन्तु धीरे-धीरे उसका स्वरूप बिगड़ता गया। हमारा दायित्व है कि हम पुन: उसी परम्परा को प्रचलित करें। इस अवसर पर आचार्य सत्येन्द्र जी, चान्दराम जी, नवीन मिश्र जी, ब्र. निरञ्जन जी, ब्र. उपेन्द्र जी, श्री वासुदेव जी आदि महानुभावों से प्रवचन व भैरुलाल जी, राजेश जी, माता ज्योत्स्ना जी, माता शान्ता अरोड़ा जी, माता कुमुदिनी आर्या जी, सुश्री श्वेता जी और ब्र. सोमेश जी से इनके सुमधुर भजन सुनने को मिले।

अन्तिम वक्तव्य था डॉ. धर्मवीर जी का, जिसकी सभी श्रोताओं को प्रतीक्षा थी। आपके व्याख्यान ने सभी को झंकझोर दिया। व्याख्यान का कुछ अंश यहाँ यथाशब्द दिया जा रहा है- ''आप लोगों ने होलीकोत्सव को बड़े आनन्द के साथ में मनाया, ये एक प्रशंसनीय बात है, लेकिन प्रश्न यह है कि इन पर्वों को कब तक मना पायेंगे, कब तक सुरक्षित रख पायेंगे? वर्तमान परिस्थितियों को देखकर तो लगता है कि कुछ साल बाद आने वाली पीढ़ी को इनका नाम भी याद ना रहे या हो सकता है कि इन पर्वों को मनाने कि अनुमति ही ना हो। इस भयंकर स्थिति को अनुभव करने के लिये कभी दिसम्बर के महीने में केरल जाइये वहाँ बाजार बड़ी धूमधाम से सजाये जाते हैं, लेकिन 'क्रिसमस डे' पर। आर्यसमाज ने काम तो किया, लेकिन राजनीति से दूर रहकर। परिणामस्वरूप अधिक परिश्रम करने पर भी परिणाम उतने अच्छे नहीं आये। महाभारत में जब द्रौपदी ने युधिष्ठिर से पूछा कि 'काल राज्य का कारण होता है या राज्य काल का कारण होता है, तो युधिष्ठिर ने कहा कि निश्चित रूप से राज्य ही काल कारण होता है। अर्थात् राजा की नीतियाँ ही यह तय करती हैं कि आने वाला काल, समय, परिस्थितियाँ कैसी होंगी?' इस दृष्टि से यदि देखा जाये तो हम बहुत पीछे हैं और **यदि वर्तमान चुनावों की दृष्टि से देखें, तो हमारे पास ये अन्तिम अवसर है, अन्तिम अवसर।** एक तरफ वो शक्ति है जो चाहती है कि कुछ रहे या ना रहे पर राष्ट्र नहीं रहना और दूसरी तरफ वो शक्ति अपने पूर्ण सामर्थ्य से राष्ट्ररक्षा में लगी हुयी है। चुनाव हमें करना है, क्योंकि यह अन्तिम अवसर है।''

२. शहीद दिवस- यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यञ्चौ चरत: सह, दिनांक २३ मार्च १९३१,जब तीन क्रान्तिकारी एक साथ फांसी के तख्ते पर झूल गये। राष्ट्र के लिये अपने प्राणों की आहुति देने वाले उन वीरों की याद में मनाया गया 'शहीद दिवस'। इस अवसर पर सभा के संयुक्त मन्त्री डॉ. दिनेशचन्द्र शर्मा जी के क्रान्तिकारी पुत्र डॉ. मृत्युञ्जय शर्मा जी ने सपरिवार ऋषि उद्यान में आकर यज्ञ किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ ब्र. सोमेश जी ने एक क्रान्तिकारी, राष्ट्रभक्ति गीत से किया- 'मेरी माँ शेरो वाली है।' इसके बाद डॉ. मृत्युञ्जय शर्मा ने अपने ओजस्वी वक्तव्य से शहीदों को श्रद्धाञ्जली अर्पित की। आपने शहीदों के जीवन से सम्बन्धित घटनाओं को बताते हुये उनके संघर्षमय जीवन पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में डॉ. धर्मवीर जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। आपने क्रान्ति के वास्तविक अर्थ को समझाते हुये कहा कि जब तक हम अपने सामाजिक ढाँचे को मजबूत नहीं करेंगे तब तक हम परतन्त्र होते रहेंगे। जिस जातिवाद, छूआछूत, ऊँचनीच, आपसी मतभेद के कारण हम गुलाम हुये थे, वे सारे कारण आज भी हैं, इसलिये हम फिर से गुलाम होने की कगार पर हैं। हमें दूसरे से उतना खतरा नहीं है, जितना कि खुद से हैं, इसलिये समाज में व्याप्त बुराइयों, विखण्डन के कारणों को हटाने में हमें विशेष पुरुषार्थ करना चाहिये। ये देश उस समय परतन्त्रता को आमन्त्रण दे चुका था, जब इस देश में स्त्री और शूद्र से

पढ़ने का अधिकार छीन लिया गया था, जब पद योग्यता के आधार पर न मिलकर जन्म के आधार पर मिलने लगा। कारण को हटायेंगे तो कार्य स्वयं हट जायेगा।

३. नव सम्वत्सर- भारतीय नववर्ष अर्थात् प्रकृति में एक नयापन। पूरे संसार (प्रकृति) में नवीनता दिखाई देती है। पेड़ों पर नयीं कोपलें आने लगती हैं, नये-नये पुष्प खिलते हैं, इस सब के साथ प्रारम्भ होता है- हमारा नववर्ष/ इस पर्व को आर्यों ने मिलकर देवयज्ञ के साथ मनाया। नवसम्वत्सर के उपलक्ष्य में विशेष आहुतियाँ दी गयीं। ऋषि उद्यान के बाहर मुख्य मार्ग पर यह आयोजन किया गया। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने उच्च स्वर में वेद के मन्त्रों का पाठ किया। उसके पश्चात् मार्ग पर आने-जाने वाले सभी यात्रियों को चन्दन का टीका लगाकर व पुष्प वर्षा करके उन्हें नववर्ष की शुभकामनायें दी गयीं। कार्यक्रम में वासुदेव जी ने गीत प्रस्तुत किया- 'नया साल आया, नया साल आया।' अन्त में मान्य डॉ. धर्मवीर जी का उद्‌बोधन हुआ। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया।

सायंकाल यज्ञोपरान्त नवसम्वत्सर के विषय में गुरुकुल ऋषि उद्यान के ही स्नातक आचार्य सत्यप्रिय जी के विचार सुनने को मिले। आपने बताया कि आज ही के दिन सृष्टि सम्वत् का भी आरम्भ होता है। जैसे ईश्वर ने सृष्टि का निर्माण करके हम पर बहुत बड़ा उपकार किया है, वैसे ही ऋषि दयानन्द सरस्वती जी ने भी हमें विचार देकर सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थ लिखकर हम पर बहुत-बहुत बड़ा उपकार किया है। आज ही के दिन महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना करके आर्य जाति पर उपकार किया।

४. संस्कृत-सम्भाषण शिविर- परोपकारिणी सभा के तत्त्वावधान में, हरीसुन्दर बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, अजमेर में ५ से १४ मार्च २०१४ तक दस दिवसीय संस्कृत सम्भाषण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में बालिकाओं ने उत्साहपूर्वक संस्कृत भाषा सीखी। समापन कार्यक्रम में गुरुकुल ऋषि उद्यान के आचार्य सत्येन्द्र जी, डॉ. निरञ्जन साहू, विद्यालय की प्रधानाचार्या आदि की सम्मानीय उपस्थिति रही। शिविर में प्रशिक्षण देने का कार्य भैरुलाल आचार्य जी ने सम्पादित किया।

५. यज्ञ एवं प्रवचन- जैसा कि विदित है कि ऋषि उद्यान आर्यजगत् के उन स्थलों में से है जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान किया जाता है तथा दोनों ही समय प्रवचन, स्वाध्याय की व्यवस्था है। इनमें वेद मन्त्रों तथा ऋषिकृत ग्रन्थों की व्याख्या का क्रम चलता रहता है। जिसके अन्तर्गत वेदों के प्रसिद्ध सूक्तों यथा श्रद्धा सूक्त, पुरुष सूक्त (ऋ. १०/९०), हिरण्यगर्भ सूक्त (ऋ. १०/१२१), वागम्भृणी सूक्त (ऋ. १०/१२५), नासदीय सूक्त (ऋ. १०/१२९), संगठन सूक्त (ऋ. १०/१९१), यजुर्वेद के ३१वें (पुरुषाध्याय), ३२वें, ३४वें (शिवसंकल्प), ४०वें (ईशावास्य) आदि का स्वाध्याय कराया जाता है। अन्य ग्रन्थों में योगादि दर्शनों का तथा सत्यार्थप्रकाशादि महर्षिकृत ग्रन्थों का स्वाध्याय भी चलता रहता है। इस प्रकार वर्तमान में डॉ. धर्मवीर यजुर्वेद के ३२वें अध्याय का व्याख्यान कर रहे हैं। आपने इसके प्रथम मन्त्र-

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्म ताऽआपः स प्रजापति।।

(यजु. ३२/१)

की व्याख्या करते हुए बताया कि किसी भी मन्त्र की उसके ऋषि और देवता के बिना व्याख्या नहीं की जानी चाहिए। अतः आप प्रतिदिन इन मन्त्रों के ऋषि (स्वयम्भू ब्रह्म) तथा देवता (परमात्मा) का स्मरण करवाकर ही मन्त्र की व्याख्या किया करते थे। आपने बताया कि इस उपरोक्त मन्त्र में परमात्मा के अग्नि, आदित्य, वायु, चन्द्रमा, शुक्र, आप व प्रजापति आदि नामों की चर्चा है। किसी वस्तु के गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार कई नाम हो सकते हैं, अतः परमात्मा के अनन्तगुण होने से उसके अनन्त नाम हैं। यहाँ परमेश्वर को 'अग्नि' कहा गया, सम्पूर्ण ऋग्वेद में लगभग २०० सूक्त अग्नि देवता विषयक है। यथा ऋग्वेद का प्रथम सूक्त को ही ले ले। यहाँ अग्नि को पुरोहित, रत्नधातम् आदि विशेषण दिए गए हैं। जिसे हम अपने मार्गदर्शन के लिए आगे रखते हैं, जिससे हम अपने अच्छे-बुरे के बारे में पूछते हैं, वह पुरोहित है। रमणीय पदार्थों/उत्कृष्ट पदार्थों को धारण करने के कारण वह रत्नधातम् है। इस प्रकार आदित्य आदि नाम भी परमात्मा के भिन्न-भिन्न गुण, कर्म व स्वभावों के कारण है।

द्वितीय मन्त्र-

सर्वे निमिषा जज्ञिरे विद्युतः पुरुषादधि।
नैनमूर्ध्वं न तिर्य्यञ्चं न मध्ये परि जग्रभत्।।

(यजु. ३२/२)

की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि सभी लग्न, मुहूर्त, घड़ी, प्रहर, दिन, रात्रि आदि काल उस परमात्मा

द्वारा ही किया गया है। यहाँ परमेश्वर को पुरुष कहा गया है। '**पुर्यां शेते इति पुरुषः**' अर्थात् जो ब्रह्माण्ड रूपी पुरी में शय करता है वह पुरुष है। अनेक वेद मन्त्रों यथा- '**सहस्रशीर्षा पुरुषः.....**' '**पुरुषऽएवेदं सर्वं.....**' '**वेदाहयेतं पुरुषं महान्तम्....**' में तथा मनुस्मृति आदि स्मृतियों में परमात्मा के लिए पुरुष शब्द आया है, यथा

प्रशासितारं सर्वेषामणीयांसमणोरपि।
रुक्माभं स्वप्नधीगम्यं विद्यात्तं पुरुषं परम्।।

(मनु. १२/१२२)

अर्थात् जो सबको शिक्षा देने वाला (सर्वेषां प्रशसितारं), सूक्ष्म से भी सूक्ष्म, स्वप्रकाशस्वरूप, समाधिस्थ बुद्धि से जानने योग्य है उसको परम पुरुष जानना चाहिए। अस्तु। अतः शरीर रूपी पुरी में शयन करने से जीवात्मा को भी पुरुष कहा जाता है। किन्तु कालान्तर में इसे जीवात्मा के लिए ही रूढ़ मानकर प्रसङ्गों की गलत व्याख्या की गई। यथा आधुनिक दार्शनिक-विद्वानों द्वारा सांख्य दर्शन को अनीश्वादी दर्शन सिद्ध किया जाता है।

यहाँ मन्त्र में कहा गया कि उस परमात्मा की इतना ऊँचा, इतना तिरछा, इतना लम्बा, इतना चौड़ा आदि कहकर तुलना नहीं कर सकते। हम व्यवहार में प्रायः पदार्थों की तुलना करते रहते हैं यथा पानी के जैसे ठण्डा, अग्नि की तरह गर्म, अतः परमात्मा को बताने के लिए भी हम मान (सादृश्य पदार्थ) ढूंढ़ते हैं, लेकिन ये सम्भव नहीं है। वस्तुतः परमात्मा की '**इदम्-इत्थम्**' (ऐसा-इतना प्रकारक) व्याख्या की ही नहीं जा सकती। इसी तथ्य को बृहदारण्यक उपनिषद् महर्षि याज्ञवल्क्य के रोचक प्रसंग से समझाती है। राजा जनक के द्वारा में जब सबसे बड़ा ब्रह्म-ज्ञानी-विषयक चर्चा हुई तो, याज्ञवल्क्य से ईश्वर सम्बन्धी अनेक प्रश्न किए गए। पुनः याज्ञवल्क्य जी ने सार रूप में यही बताया कि उस परमात्मा के विषय में 'यह परमात्मा है' ऐसा ज्ञापन नहीं किया जा सकता, क्योंकि परमात्मा के अनन्त गुण, कर्म व स्वभाव हैं।

ब्र. प्रभाकर व दीपक आर्य

आर्यो! धर्म रक्षा-धर्म प्रचार के लिये अब आगे आओ।

परोपकारिणी सभा अपने सर्व सामर्थ्य से ऋषि मिशन की सेवा में जुटी है। आर्यधर्म पर वार करने वालों का उत्तर देने के लिए परोपकारिणी सभा हर घड़ी तैयार रहती है। स्वामी स्वतन्त्रानन्द पीठ की स्थापना करके सुयोग्य विद्वान् को अरबी उर्दू के विद्वान् तैयार करने के लिये नियुक्त कर दिया। अब सभा के पास पढ़ाने वाले हैं। लगनशील सुयोग्य युवक तथा सेवानिवृत्त अनुभवी आर्य विद्यार्थी यहाँ तीन-तीन मास, छः-छः मास तथा वर्ष-दो वर्ष रहकर अरबी आदि पढ़कर पं. धर्मभिक्षु जी, पं. रामचन्द्र देहलवी जी तथा पं. शान्तिप्रकाश जी के रिक्त स्थान की भरपाई करें। इस पुण्य कार्य में दानी तथा समाजें सभा को उदारता से दान देकर सहयोग करें।

नवीन प्रकाशन का परिचय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित वैदिक पुस्तकालय के द्वारा प्रेरणास्पद व भक्त्योत्पादक **कैलेण्डरों** व **स्टीकरों** का नवीन प्रकाशन किया गया है।

कैलेण्डर - (क) महर्षि दयानन्द की शिक्षाएँ- इसमें महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित धार्मिक-व्यवहार से लेकर ईश्वर-भक्ति तक ले जाने वाले प्रेरक-वाक्यों का संग्रह किया गया है।

(ख) सन्ध्या सुरभि- इसमें महर्षि दयानन्द जी की भक्त्योपादक वाक्य-रचना का आधार लेकर वैदिक सन्ध्या के भावों को सुरभित किया गया है।

(ग) गायत्री मन्त्र- इसमें गायत्री मन्त्र के अनेक विशेष अर्थों के द्वारा ईश्वर के गुणों के प्रति प्रेरित किया गया है। साथ में मन्त्र का भाव कविता रस में भी बाँधा गया है।

स्टीकर- इसमें परमात्मा के मुख्य नाम **ओ३म्** व महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के चित्र को विशेषतः प्रकाशित किया गया है।

सभी आर्यजनों को ये नवीन प्रकाशन अवश्य ही लाभदायक सिद्ध होंगे।

आर्यजगत् के समाचार

१. प्रवेश सूचना- गुरुकुल आर्य विद्यापीठ खेरली, अलवर, राजस्थान में सत्र २०१४-२०१५ के ६ठी कक्षा (आयु ९ से ११ वर्ष) एवं ७वीं कक्षा (आयु १० से १२ वर्ष) में बालकों के सर्वांगीण मानवीय विकास के लिये प्रवेश हेतु सम्पर्क करें- सोमवीर, ०९६९४२०१३६३

२. प्रवेश सूचना- कन्या गुरुकुल भुसावर, भरतपुर, राजस्थान में सत्र २०१४-२०१५ के ६ठी कक्षा (आयु ९ से ११ वर्ष) एवं ७वीं कक्षा (आयु १० से १२ वर्ष) में कन्याओं के सर्वांगीण मानवीय विकास के लिये प्रवेश हेतु सम्पर्क करें- प्रियंका भारती, ०८४४१०८७४०८

३. पाणिनि कन्या महाविद्यालय, बनारस में अन्तर्राष्ट्रिय महिला छात्रावास का निर्माण बड़ी कन्याओं के लिये किया गया है। इसका उद्घाटन ८ अप्रैल रामनवमी के दिन सम्पन्न हो रहा है। सभी कन्या गुरुकुलों व कम से कम १२वीं कक्षा उत्तीर्ण इच्छुक जिज्ञासु बहिनों के लिये सूचित किया जाता है कि यदि अष्टाध्यायी महाभाष्य पर्यन्त पाणिनि व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छन्द, वैदिक गणित आदि वेदांगों का अध्ययन करना चाहती हैं तो शीघ्र सम्पर्क करें। इस वर्ष नये सत्र से विज्ञान प्रयोगशाला के माध्यम से विज्ञान विषय लेकर १२वीं कक्षा उत्तीर्ण कन्याओं के लिये विशेष कक्षायें भी प्रमाण पत्र सहित आरम्भ होने की तैयारी में है, जिससे कि वे भविष्य में आर्थिक लाभ भी प्राप्त कर सकती हैं। सभी बहिनें-मायें जो अपनी बेटियों को उत्तम संस्कार, यज्ञ कराना आदि सिखाना चाहती हैं, उन्हें वैदिक प्रचारिका बनाना चाहती हैं, उनके लिये खुला द्वार है, वे सम्पर्क कर सकती हैं- ०९२३५५३९७४०

४. प्रवेश सूचना- गुरुकुल संस्कृत महाविद्यालय, शुक्रताल, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. गंगा के पावन तट पर ऋषि-महर्षियों की तपस्थली, प्रकृति के सुरम्य वातावरण में स्थित है। यहाँ संस्कृत भाषा के साथ-साथ आधुनिक विषयों जैसे अंग्रेजी, गणित, इतिहास, भूगोल एवं अर्थशास्त्र आदि का अध्यापन सुयोग्य अध्यापकों के द्वारा कराया जाता है। कम्प्यूटर शिक्षा का उत्तम ज्ञान कराया जाता है। कृपया अपने होनहार बच्चों को संस्कारयुक्त शिक्षा दिलाने हेतु दूरभाष पर वार्ता करके प्रवेश दिलायें। प्रवेश नियम डाक से अथवा व्यक्तिगत रूप से प्राप्त कर सकते हैं। **सम्पर्क- आचार्य इन्द्रपाल, ०९४११९२९५२८**

आवश्यकता- गुरुकुल शुक्रताल में प्रबन्धकीय वेतन पर एक प्राचीन व्याकरण पढ़ाने हेतु व्याकरणाचार्य, संरक्षक, रसोईया तथा कम्प्यूटर शिक्षक की आवश्यकता है। **सम्पर्क- आचार्य इन्द्रपाल, ०९४११९२९५२८**

५. आवश्यकता- श्रद्धानन्द अनाथालय ट्रस्ट, करनाल (हरियाणा) को एक विद्वान् पुरोहित (शास्त्री) की आवश्यकता है। जिसने गुरुकुल पद्धति से शिक्षा ग्रहण की हो और विवाहित हो। भोजन एवं आवास की निःशुल्क व्यवस्था, वेतन योग्यतानुसार। अपने प्रमाण-पत्र शीघ्र भेजे- **महाप्रबन्धक- ०९४१६४-५६४२९**

६. सम्मानित- बाबू गुलाब राय स्मृति संस्थान आगरा द्वारा श्री प्यारेलाल विज्ञान लेखन सम्मान हिन्दी वाङ्मय के ज्योतिपुञ्ज बाबू गुलाब राय एम.ए. की १२६वीं जन्म जयन्ती ३ फरवरी २०१४ के पुनीत अवसर पर श्री देवनाराण भारद्वाज प्रसिद्ध विज्ञान लेखक को उनकी यशस्वी सेवाओं एवं योगदान के लिए शॉल, मान पत्र एवं धनराशि से समारोह पूर्वक सम्मानित किया गया। विज्ञान रत्न श्री लक्ष्मण प्रसाद ने २८/२/२०१४ को अपनी आवासीय आनन्द वाटिका में वयस्वी सहयोग मण्डल की प्रबुद्ध गोष्ठी में श्री भारद्वाज का अभिनन्दन किया।

७. वेद प्रचार- आर्य उप प्रतिनिधि सभा फर्रुखाबाद के तत्त्वावधान में मेला रामनगरिया घटियाघाट में दिनांक १६ जनवरी से १४ फरवरी २०१४ तक वेद प्रचार शिविर धूमधाम से एवं सफलतापूर्वक जिला सभा के प्रधान आचार्य चन्द्रदेव शास्त्री के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ जिसमें आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध संन्यासी विद्वान् एवं भजनोपदेशकों द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार किया गया। शिविर के अन्तर्गत महिला सम्मेलन, सन्त सम्मेलन, गोरक्षा एवं राष्ट्र रक्षा जैसे विविध सम्मेलनों का आयोजन किया गया।

८. बलिदान दिवस मनाया- ६ मार्च आर्यसमाज रामपुरा कोटा द्वारा संचालित मातृ सेवा सदन बालिका विद्यालय के प्रांगण में पण्डित लेखराम बलिदान दिवस मनाया गया। आर्यसमाज रामपुरा कोटा के मन्त्री एवं विद्यालय के व्यवस्थापक डी.पी. मिश्रा ने प्रेस विज्ञप्ति जारी करते हुए बताया कि कार्यक्रम का शुभारम्भ देवयज्ञ से हुआ।

९.जन्मोत्सव मनाया- वेद प्रचार मण्डल आर्यावर्त्त

के तत्त्वावधान में दिनांक २५ फरवरी को भारतीय नव जागरण के पुरोधा एवं आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव आर्य समाज मन्दिर लोहाई रोड, फर्रुखाबद में धूमधाम से मनाया, कार्यक्रम में विभिन्न आर्य समाजों तथा सामाजिक संगठनों के लोग एकत्रित हुए, आर्य वीर दल फर्रुखाबाद के अध्यक्ष सन्दीप आर्य, मन्त्री डॉ. हरिदत्त द्विवेदी ने अतिथियों को वैदिक साहित्य भेंट कर उनका सत्कार किया।

१०. कुरीतियों का विरोध- आर्यसमाज जिला सभा कोटा द्वारा १० मार्च २०१४ को अस्पतालों एवं सार्वजनिक स्थानों पर टोने-टोटके कर अन्धविश्वास को बढ़ावा देने वाले कार्यों पर रोक लगाने के लिए जिला कलेक्टर महोदय कोटा को ज्ञापन सौंपा गया। आर्यसमाज ने पहले भी इस प्रकार के पाखण्ड, अन्धविश्वास और कुरीतियों के प्रति विरोध प्रदर्शन किया। इस अवसर पर जिला कलेक्टर महोदय से आग्रह किया गया कि आत्मा को पकड़ने तथा इस प्रकार के सभी पाखण्डों एवं अंधविश्वास के कार्यों को अस्पताल एवं सार्वजनिक स्थानों पर तत्काल प्रभाव से रोकने के लिए दिशा निर्देश जारी करें। आर्यसमाज द्वारा एमबीएस अस्पताल में टोटकेबाजों का विरोध कर रोकने वाली जागरूक महिला व पुलिसकर्मी को आर्यसमाज द्वारा सम्मानित किया जायेगा।

११. संस्कार सम्पन्न- दक्षिण अफ्रीका के रस्टनबर्ग शहर में श्री दयानन्द शर्मा के निवास स्थान पर गुरुकुल प्रभात आश्रम, मेरठ से पधारे तपोनिष्ठ, सन्त शिरोमणि पूज्यपाद स्वामी विवेकानन्द सरस्वती के ब्रह्मत्त्व में १५ मार्च २०१४ को सामवेद-पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति तथा उनके छः पौत्रों चि. भारत, यश, केतन, वंश, संस्कार एवं ध्रुव का उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ। सभी गणमान्य आगन्तुकों ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर संस्कारों के महत्त्व को जाना। इसके साथ ही पूज्य स्वामी जी मोजाम्बीक देश की राजधानी मापुतों में भी वैदिक संस्कृति के प्रभावपूर्ण प्रवचनों से वहाँ के निवासियों को मन्त्र-मुग्ध कर चुके हैं, जहाँ श्री सुनील पाण्ड्या के प्रयास से वेद-मन्दिर का निर्माण हुआ है तथा सालामांगा में भाई श्री अश्विन पाण्ड्या ने भी वहाँ की बस्ती में एक बड़े ही भव्य आनन्द-आश्रम का निर्माण किया है।

१२. बोधोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज बेलगडा, सिमरिया, जि. चतरा, झारखण्ड का ३८वाँ वार्षिकोत्सव एवं ऋषि बोधोत्सव हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। दो दिवसीय इस कार्यक्रम में विशेष यज्ञ, हवन, सत्संग, संस्कार, भजन व प्रवचन का आयोजन किया गया। साथ ही नारी सम्मान, नैतिक शिक्षा अंधविश्वास, आडम्बर, गौ पालन, युवा राष्ट्र शक्ति आदि विषयों पर विद्वानों ने उपदेश दिए। इस कार्यक्रम के मुख्य आमन्त्रित विद्वान् सुश्री मैत्रेयी आर्या सहारनपुर, उ.प्र., पं. सत्यप्रकाश आर्य, दानापुर पटना, पं. वासुदेव शास्त्री, हजारीबाग, डॉ. बालकेश्वर वैद्य, चतरा, आचार्य कृष्णदेवार्य कौटिल्य आर्ष कन्या गुरुकुल हजारीबाग थे।

१३. यज्ञोत्सव- प्रथम वर्ष जन्म तिथि पर ६ मार्च २०१४ को चतुर्वेद शतक मन्त्रों से श्री अनीश शर्मा की एकमात्र सुपुत्री कुमारी भूमिका की प्रथम जयन्ति एक वर्ष की होने के उपलक्ष्य में अजमेर के आदर्श नगर निवासी ने ऋषि उद्यान स्थित आर्ष गुरुकुल के उपाचार्य जी से यज्ञ कराया। ब्रह्मचारियों ने वेद पाठ किया, अन्य आर्य विद्वानों ने उपेदश, भजन की प्रस्तुति दी। भविष्य में प्रतिवर्ष जन्म तिथि पर ऐसे ही आयोजन का संकल्प लिया गया।

शोक समाचार

१४. सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के पूर्व प्रधान, मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भोपाल के पूर्व मन्त्री एवं प्रधान, आर्यसमाज नागदा के संरक्षक, समाजसेवी, किसान नेता, स्व. पटेल सेवाराम आर्य का इन्दौर में उपचार के दौरान ७८ वर्ष की अवस्था में असामयिक निधन हो गया, इस अवसर पर आपको राष्ट्रीय व प्रदेश के प्रमुखजनों ने भावभीनी, अश्रुपूर्ण श्रद्धांजली अर्पित की।

१५. आर्यसमाज पीपाड़, जि. जोधपुर, राजस्थान से संलग्न कोसाना आर्यसमाज के पूर्व प्रधान स्व. बंशीलाल आर्य के लघु भ्राता एवं पीपाड़ आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष शिवरतन आर्य के ज्येष्ठ भ्राता श्री किसन आर्य का निधन ८३ वर्ष की आयु में ८ मार्च २०१४ को जोधपुर में हो गया। आपका पूरा परिवार वैदिक विचार-धाराओं से संस्कारित है।

चुनाव

१६. उत्तराखण्ड आर्य प्रतिनिधि सभा देहरादून के चुनाव में **प्रधान**- श्री देवराज आर्य, **मन्त्री**- श्री आनन्द प्रकाश आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री प्राणनाथ खुल्लर को चुना गया।

१७. सार्वदेशिक आर्य वीर दल, पूर्वी लल्लापुरा, वाराणसी, उ.प्र. के चुनाव में **संचालक**- डॉ. विवेक आर्य, **मन्त्री**- श्री प्रमोदकुमार आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री आनन्द आर्य को चुना गया।

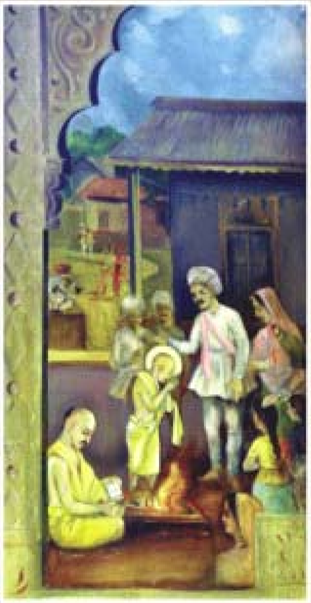

महर्षि दयानन्द के जीवन की झलकियाँ

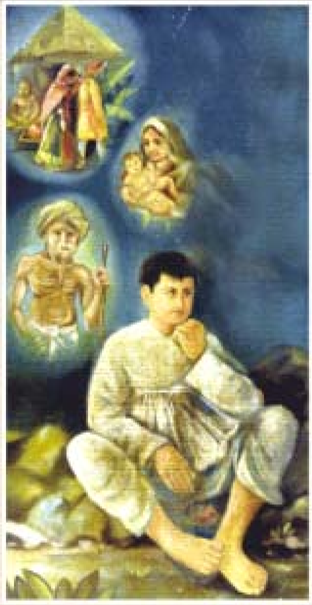

आर जे/ए जे/80/2013-2014 तक   प्रेषण : १५ अप्रैल , २०१४   RNI. NO. ३९५९/५९

पं. भगवानस्वरूप जी न्यायभूषण

पं. गंगाप्रसाद जी के निरन्तर अस्वस्थ रहने, फलतः अनुपस्थित होने के कारण हुये रिक्त स्थान पर वैदिक यन्त्रालय, अजमेर के भूतपूर्व प्रबन्धकर्त्ता तथा राजस्थान के प्रख्यात आर्य नेता एवं कार्यकर्ता पं. भगवानस्वरूप जी न्यायभूषण को दिनांक ३ अक्टूबर १९६५ के अधिवेशन में सभा ने अपना सदस्य चुना। श्री न्यायभूषण जी को सभा का पुस्तकाध्यक्ष पद भी दिया गया। उन्होंने अपने कार्यकाल में महर्षि की पुस्तकों के मुद्रण एवं प्रकाशन की सुचारु व्यवस्था की। वे सभा की विद्वत् समिति के सभासद भी रहे। इस समिति के तत्त्वावधान में सत्यार्थप्रकाश के नवीन संस्करण का प्रकाशन ग्रन्थ की मूल पाण्डुलिपि से पूर्ण मिलान कर कराया गया। सभा के मुखपत्र परोपकारी के प्रबन्ध-सम्पादन का कार्य भी पण्डित जी ने सफलतापूर्वक निर्वाह किया। उनके प्रयत्नों से इस पत्र की गणना आर्य जगत् के प्रमुख पत्रों में होने लगी। वैदिक यन्त्रालय से अवकाश ग्रहण कर लेने के अनन्तर वे सभा के कार्यालय को भी देखते थे तथा सभा के दैनन्दिन पत्र व्यवहार तथा अन्य कार्यों की देखरेख उनके जिम्मे थी। न्यायभूषण जी को सभा एवं राजस्थान प्रान्त में आर्य समाज की गतिविधियों का विशद रूप से ऐतिहासिक ज्ञान था। वे सभा विषयक जानकारी के जीवित कोष थे। खेद है कि गत १२ दिसम्बर १९७३ को उनका निधन हो गया। (सम्बन्धित विवरण पृष्ठ ११ पर)

परोपकारिणी सभा का इतिहास से साभार।

प्रेषकः
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१

डाक टिकट